39 वर्षों से निरंतर

वक्फ बोर्ड की असलियत 04 | तसलीमा नसरीन का उपन्यास 'लज्जा' 07 | एससी-एसटी आरक्षण 10

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

भाद्रपद कृ. 14, वि.2081, युगाब्द 5126, 01 सितम्बर, 2024

मुखर होता हिंदू

बांग्लादेश में हिंदू उत्पीड़न के विरोध में विश्वभर में प्रदर्शन

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

सेक्युलर और मानवाधिकारवादी चुप क्यों?

भारत का एक और पड़ोसी बांग्लादेश गहरी राजनीतिक अस्थिरता के युग में प्रवेश कर गया है। आरक्षण विरोध के नाम आरम्भ हुआ छात्र आंदोलन, कट्टरपंथी इस्लामिक हिंसा में बदल गया। बांग्लादेश सरकार अमेरिका व पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई के षड्यंत्र का शिकार हुई है। बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद वहां रहने वाले लगभग 1.35 करोड़ हिंदू समाज के साथ जो बर्बर हिंसा की जा रही है वह पूरी मानवता को शर्मसार करने वाली है। शेख हसीना के तख्तापलट के बाद से राजधानी ढाका सहित पूरे बांग्लादेश में हिंदुओं पर लगातार हमले हो रहे हैं। उनके घरों, प्रतिष्ठानों, दुकानों, मंदिरों को आग लगाई जा रही है उन्हें लूटा जा रहा है। बांग्लादेश में छात्र आंदोलनकारी यदि केवल आरक्षण विरोधी आंदोलन कर रहे थे तो वह आंदोलन अब तक समाप्त हो जाना चाहिए था। किंतु अब इस हिंसा ने कुछ और ही परिदृश्य बना दिया है। बांग्लादेश से आज हिंदू पलायन करना चाहते हैं। बांग्लादेश में हिंदुओ के साथ ऐसी हिंसा शेख हसीना सरकार के कार्यकाल में भी किसी न किसी बहाने होती रही है। आंकड़ों के अनुसार बांग्लादेश में 2013 से 2022 तक हिंदुओं पर 3,600 हमले हुए थे। कभी ईशनिंदा के नाम पर, कभी किसी बहाने। वहां विभाजन के समय हिंदू 32 प्रतिशत थे जो अब 8 प्रतिशत से भी कम बचे हैं और वह भी लगातार जेहादी उत्पीड़न के शिकार हो रहे हैं।

बांग्लादेश प्रकरण पर कांग्रेस अथवा इंडी गठबंधन दल के किसी भी नेता ने हिंदुओं पर हो रही हिंसा की निंदा तक नहीं की है। कांग्रेस के सत्तालोलुप नेता तो 'भारत में भी बांग्लादेश जैसे हालात हो सकते हैं' जैसे बयान दे रहे हैं।

कांग्रेस नेता व सांसद राहुल गांधी जिन्होंने अभी हाल ही में लोकसभा में हिंदुओं को हिंसक कहा था, बांग्लादेश की हिंसा की निंदा तक नहीं कर पा रहे है।

भारत में भी आज के विषम राजनीतिक वातावरण में हिंदुओं की सुरक्षा व अस्मिता सबसे सस्ती हो गई है क्योंकि वह जातियों में बंटा होने के कारण बड़ा वोट बैंक नहीं बन सकता। यह भी विचारणीय प्रश्न है कि क्या बांग्लादेश की घटनाओं से भारत के हिंदू कुछ शिक्षा लेंगे ? बांग्लादेश में जो मारे जा रहे हैं वो केवल हिंदू हैं, कोई नहीं देख रहा कि वो दलित है, पिछड़ा है या सवर्ण है। केवल यह देखा जा रहा है कि वह हिंदू है।

– राजकुमार सोनी, श्रीगंगानगर

विशेषांक संबंधी सूचना

पाथेय कण का आगामी विशेषांक **'राष्ट्रीय सुरक्षा'** को लेकर दीपोत्सव के पावन पर्व पर प्रकाशित करने की योजना बनी है। लेखक बंधु उक्त विषय के संदर्भ में पाथेय कण के संपादक से मोबाइल नम्बर 9414312288 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

ओ बांग्लादेशी हिंदू

■ **डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय**

बांग्लादेशी हिंदू जो,
ना आरएसएस के समर्थक थे,
ना बीजेपी को वोट देते थे,
ना हिंदू-हिंदू करते थे,
ना इस्लाम की निंदा करते थे,
ना हिंदू-मुस्लिम करते थे,
उनको भी मजहबियों ने
मार दिया।

बांग्लादेशी हिंदू!
जिन्होंने चोटी तिलक
जनेऊ त्याग दिया था,
हिंसा से जो रहते थे दूर,
शांतिप्रिय होकर जो
सादा जीवन जीते थे,
फिर भी जेहादियों ने
उनको काट दिया।

बांग्लादेशी हिंदू
अहिंसा के पुजारी हिंदू,
समरस थे इस्लाम से जो
बांग्लादेश की उन्नति में
भागीदार थे जो,
फिर भी मुल्लाओं ने
मार दिया।

ओ बांग्लादेशी हिंदू!
अहिंसा के पुजारी हिंदू!!
आत्मा से अविनाशी हिंदू !!!
जात पांत को छोड़ना होगा
संगठित हो संघर्ष करना होगा
राम कृष्ण को सुमिरन कर
भविष्य अपना बनाने को
अर्जुन की भांति
शस्त्र उठाना होगा।

ओ बांग्लादेशी हिंदू!
अब तो तुझे जगना होगा
वीर सनातनी बनना होगा।।

– निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़

पाथेय कण
भाद्रपद कृष्ण 14 से भाद्रपद शुक्ल 12 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
01-15 सितम्बर, 2024
वर्ष : 40 अंक : 11

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसेज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। (अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं)

हम चुपचाप नहीं रह सकते

अगस्त माह के मध्य और उत्तरार्द्ध में एक ऐसा दृश्य बांग्लादेश व भारत सहित विश्व के कई देशों में दिखाई दिया जो अभूतपूर्व था। यह दृश्य हिंदू समाज में चेतना और भविष्य के प्रति आशा का संचार करने वाला है।

बांग्लादेश में बीती 5 अगस्त को सत्ता पलट के साथ ही हिंदू उत्पीड़न का एक दौर शुरू हो गया था। हत्याएं, मंदिर-घरों में आगजनी व तोड़फोड़ तथा अपहरण व बलात्कार। इन परिस्थितियों में, जैसा कि हमेशा होता आया है, हिंदू स्वयं अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा चिंता में डूबा रहता है। ऐसे वातावरण में विश्व ने देखा कि लाखों की संख्या में हिंदू बांग्लादेश की राजधानी ढाका तथा अन्य शहरों में सड़क पर आकर विरोध जता रहा है। अपने भय पर विजय प्राप्त कर उत्पीड़न के विरोध में आवाज बुलंद कर रहा है। उसने हिम्मत और प्रतिबद्धता के साथ 'हिंदू को भी जीने का अधिकार है' का उद्घोष किया। यह दृश्य उत्साहवर्धक था। ऐसा पहली बार हो रहा था जब उत्पीड़न के विरुद्ध हिंदू ने सामूहिक रूप से आवाज उठाई हो।

यह हिंदू चेतना बांग्लादेश तक ही सीमित नहीं थी। भारत के लगभग सभी शहरों-कस्बों में तथा अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, स्वीडन, नेपाल सहित विश्व के कई शहरों में हिंदू अपने घरों से निकल कर बंगाली हिंदुओं के समर्थन में उतरे। ऐसा व्यापक प्रतिरोध पहली बार हुआ। यह अभूतपूर्व था। यह वैश्विक हिंदू चेतना जाग्रत होने का लक्षण है।

बांग्लादेशी हिंदुओं का बड़ी संख्या में सड़कों पर उतरना वहां के नए सत्ताधीशों और कट्टरपंथियों के लिए भी चौंकाने वाला था। सामान्यतया घबराकर घर बार छोड़कर जाने वाला समुदाय अचानक पूरी ताकत से सड़कों पर कैसे उतर आया? क्योंकि, आमतौर पर हिंदुओं से इस तरह के विरोध प्रदर्शन की अपेक्षा नहीं की जाती। वे इकट्ठे भी होते हैं तो किन्हीं धार्मिक समागमों में। परंतु इस बार हिंदू अपने अस्तित्व और अस्मिता को लेकर मुखर होता हुआ दिखाई दिया।

इसका परिणाम हुआ। बांग्लादेश की नई सरकार के मुखिया मोहम्मद युनूस को हिंदुओं के बीच जाकर कहना पड़ा कि सरकार हिंदुओं सहित सभी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए वचनबद्ध है तथा दोषियों को सजा दी जावेगी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी ऐसी हिंसा की निंदा करते हुए चिंता प्रकट की है।

भारत व नेपाल हिंदू बहुल देश हैं। विश्व के लगभग सभी देशों में निवास करने वाला हिंदू 20 से ज्यादा देशों में उल्लेखनीय संख्या में रहता है। कई देशों की अर्थव्यवस्था में हिंदुओं का बड़ा योगदान है। हिंदुओं की सामूहिक आवाज विश्व स्तर पर पहली बार उभरती दिखाई दी।

भारत में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन में सामूहिक रूप से हिंदू के नाते अवश्य हिंदू समाज ने संघर्ष किया। 1966 में गौहत्या बंदी के लिए भी साधु-संत सड़कों पर उतरे थे। गोधरा में हिंदुओं को जलाए जाने जैसी अमानवीय घटनाओं पर विरोध प्रदर्शन और ज्ञापन दिए जाते रहे। परंतु इन घटनाओं से पूर्व 1921-22 में मोपला विद्रोह और खिलाफत आंदोलन के दौरान एवं 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग के 'डायरेक्ट एक्शन डे' पर लाखों हिंदू जिहादियों द्वारा मारे गए थे। मातृशक्ति अपहरण और बलात्कार की शिकार होती रही। कश्मीर में ऐसे ही उत्पीड़न के कारण वर्ष 1990 में लाखों हिंदुओं को पलायन करना पड़ा, परंतु भारत या विश्व के किसी कोने से हिंदुओं की सामूहिक आवाज सुनाई नहीं पड़ी।

परंतु अब दृश्य बदलता दिखाई दे रहा है। नूपुर शर्मा मामले में उदयपुर के कन्हैया लाल का गला रेतने पर सर्व हिंदू समाज ने भारत में सर्वत्र लाखों की संख्या में इकट्ठे होकर अपना विरोध जताया था। परंतु वैश्विक स्तर पर संभवत: पहली बार इतने व्यापक स्तर पर हिंदू ने अपनी सामूहिक आवाज और अन्याय के विरुद्ध लड़ने की इच्छा शक्ति का प्रकटीकरण किया।

विश्व के कल्याण एवं सब प्राणियों में सद्भावना की बात करने वाले तथा अपने व्यक्तिगत मोक्ष के लिए प्रयास करने वाले हिंदू को आततायियों ने कमजोर समझ लिया था। हिंदू तो शायद भूल ही बैठा कि उसके देवी-देवता जहां एक हाथ में शास्त्र या कोई पुष्प लिए हैं तो दूसरे हाथ में कोई न कोई शस्त्र धारण किए रहते हैं तथा 'वीर भोग्या वसुंधरा' जैसे शास्त्रोक्त वचन भी हैं और 'शठे शाठ्यम समाचरेत्' जैसे चाणक्य नीति वाक्य भी।

बांग्लादेशी हिंदू उत्पीड़न के विरोध में अमेरिका के ह्यूस्टन शहर में हिंदुओं ने अपने हाथों में तख्तियां ले रखी थीं, जिन पर लिखा हुआ था- 'हिंदू नरसंहार बंद करो', 'अब खड़े हो जाओ और बोलो-'हिंदू जीवन मायने रखता है।', 'हम भागेंगे नहीं, हम छिपेंगे नहीं', 'हमारे भाई पीड़ित हों तो हम चुपचाप नहीं रह सकते।'

अब समय आ गया है कि यह आवाज हर हिंदू के मुँह से निकलनी चाहिए', सामूहिक रूप से निकलनी चाहिए- 'हम भागेंगे नहीं, हम छिपेंगे नहीं', 'हमारे भाई पीड़ित हों तो हम चुपचाप नहीं रह सकते।' *-रामस्वरूप*

वक्फ बोर्ड को दे दिए थे असीमित अधिकार

पाकिस्तान से भी ज्यादा भूमि है वक्फ बोर्ड के पास

कांग्रेसी सरकारों ने कानूनी रूप से वक्फ बोर्ड को इतनी शक्तियां दे दी थीं कि यह भूमाफिया बन गया। मुसलमानों ने तिरुचिरापल्ली के 15 सौ वर्ष पुराने गांव, कलकता की विधानसभा, एयरपोर्ट, ताजमहल, रामजन्मभूमि, ज्ञानवापी, मथुरा कृष्ण जन्मभूमि और यहाँ तक कि अम्बानी के घर को भी अपना बताते हुए उस पर दावा ठोक दिया। इस तरह वक्फ एक्ट जमीन हड़पने का एक टूल बन गया।

वक्फ शब्द अरबी है, इसका कुरान में कहीं उल्लेख नहीं। भारत में वक्फ बोर्ड ने जिस प्रकार जमीनों पर कब्जा किया, उससे इसे भूमाफिया कहा जाने लगा। वक्फ का इतिहास देखें तो वह भी माफियागिरी से ही शुरू होता है।

इतिहास

इसे जानने के लिए पैगम्बर मोहम्मद के काल में जाना होगा। मोहम्मद इस्लाम को फैलाने के प्रयास कर रहे थे, तभी उमर ने खैबर को जीत लिया। इससे जमीन के टुकड़े के साथ ही लूटी हुई कुछ सम्पत्ति, बाग-बगीचे और पानी के कुएं भी हाथ आ गए। तब मोहम्मद ने उमर से कहा, कुछ ऐसा करो कि इसका लाभ गरीब मुसलमानों को मिलता रहे। हदीस के अनुसार, यहाँ से वक्फ नामक बीज अंकुरित हुआ। बाद में जैसे-जैसे लूटपाट बढ़ी, बड़ी सम्पत्तियां भी हाथ आने लगीं। तब इस पर और गहराई से विचार शुरू किया गया। उस समय वक्फ का संबंध इस्लाम से नहीं था। लेकिन आज जैसे ही जमीन को लेकर कुछ शासकीय नियम थे, जैसे जमीन पर टैक्स लगना, किसी व्यक्ति का वारिस न होने पर वह जमीन सरकार की हो जाना आदि, इन प्रावधानों से बचने के लिए सम्पत्ति वक्फ की जाने लगी। ऐसा व्यक्ति जो मृत्यु शैया पर है, जिसका कोई वारिस नहीं है तो वो अपनी संपत्ति अपने किसी निकट के रिश्तेदार के नाम से वक्फ कर देता था। इससे वह शासन के हाथ में न जाकर किसी मुसलमान रिश्तेदार के पास ही रह जाती थी। कभी-कभी उसे मदरसे, अस्पताल आदि का आवरण भी पहना दिया जाता था। उस्मानी साम्राज्य तक यह सब चलता रहा।

भारत में वक्फ की शुरुआत

भारत में जहाँ-जहाँ मुसलमान शासक थे, वहाँ सम्पत्तियां वक्फ होती थीं, कुछ लोग दान भी करते थे। लेकिन यह सब अव्यवस्थित था और भारत में मुसलमान भी बुरी तरह विभाजित थे। तब यहाँ पर हर मुस्लिम फिरके का अलग वक्फ था। जैसे, सुन्नी वक्फ, शिया वक्फ, अहले हदीस वक्फ, देवबंदी वक्फ, बरेलवी वक्फ, लाहौरी वक्फ, देहलवी वक्फ, जयपुरी वक्फ, शरीफ वक्फ, अजबाब वक्फ आदि। इतने सारे वक्फ हुआ करते थे और इनमें आपस में लड़ाइयां होती रहती थीं। 1879 में इन लड़ाइयों के निपटान के लिए आए आवेदनों को अंग्रेजों ने हाईकोर्ट को भेज दिए। अंग्रेजी जजों ने निर्णय दिया कि हम इसको प्राइवेट प्रॉपर्टी नहीं मानते और सभी रिटों को रिजेक्ट कर दिया। उस समय सुप्रीम कोर्ट भारत के बजाय लंदन में होता था, जिसे 'प्रिवी काउंसिल' कहा जाता था। हाईकोर्ट से रिजेक्ट होने के बाद ये सारे केस प्रिवी काउंसिल में चले गए। काउंसिल ने 1894 में आदेश दिया कि वक्फ का अर्थ हमारी दृष्टि में केवल पब्लिक, चैरिटेबल और रिलीजियस होना चाहिए, निजी नहीं। इस आदेश के बाद भारत में बवाल मच गया।

पहला वक्फ कानून

गवर्नर जनरल की काउंसिल के सामने यह विषय रखा गया। तत्पश्चात् 1913 में एक एक्ट बना, जिसका नाम रखा गया 'मुसलमान वक्फ वैलीडेटिंग एक्ट' (वैधीकरण अधिनियम) इस तरह वक्फ एक्ट की यह यात्रा वर्ष 1913 में शुरू हुई, जो 1923, 1954, 1995 से होती हुई 2013 तक पहुंची। तब तक कांग्रेस ने कानूनी रूप से इसको इतनी शक्तियां दे दीं कि यह भूमाफिया बन गया।

दी गई असीमित शक्तियाँ

शक्तियाँ ऐसी कि मान लीजिए किसी का घर है, जिसमें उसके पुरखे सैकड़ों वर्षों से रहते आए हैं, लेकिन एक दिन वक्फ बोर्ड ने उन्हें नोटिस दिया कि बोर्ड

को पता चला है, सौ वर्ष पहले इस घर की जमीन पर किसी ने नमाज पढ़ी थी, तो आप कुछ नहीं कर सकते। क्योंकि प्रावधान है कि यदि वक्फ को लगता है कि यह जमीन उसकी है तो वो उसे अपने रजिस्टर में दर्ज कर लेगा, आपत्ति दर्ज कराने के लिए 30 दिन का समय मिलेगा, लेकिन आप आपत्ति नहीं दर्ज करा पाएंगे क्योंकि आपको पता ही नहीं चलेगा कि ऐसा कोई नोटिस इशू हुआ है। क्योंकि यह किसी ऐसे समाचार पत्र में छपा होगा, जिसका सर्कुलेशन 200-300 प्रतियां होगा या वह उर्दू के अखबार में छपा होगा, जिसको आप पढ़ते ही नहीं। मान लीजिए आपको पता चल भी गया तो आप वक्फ ट्रिब्यूनल में जाएंगे, वहाँ वही मुतवल्ली मिलेगा, जिसने आपकी जमीन वक्फ रजिस्टर में चढ़ाई है, बाकी भी मुसलमान ही होंगे। ट्रिब्यूनल का निर्णय आपको मानना होगा क्योंकि इस मामले में ट्रिब्यूनल ही सबसे बड़ी अथॉरिटी है। आप हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट नहीं जा सकते। भारत में किसी भी बोर्ड को डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के बराबर माना जाता है। परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों ने तिरुचिरापल्ली के 15 सौ वर्ष पुराने गाँव, कलकत्ता की विधानसभा, एयरपोर्ट, ताजमहल, रामजन्मभूमि, ज्ञानवापी, मथुरा कृष्ण जन्मभूमि और यहाँ तक कि अम्बानी के घर को भी अपना बताते हुए उस पर दावा ठोक दिया। इस तरह वक्फ एक्ट जमीन हड़पने का एक टूल बन गया।

ट्रिब्यूनल में मामला निपटान की भी कोई समय सीमा नहीं थी। वह अनंतकाल तक भी चल सकता था। इस दौरान वक्फ बोर्ड पीड़ित से किराए के नाम पर पैसे वसूलता था। जो दे सकता था, वह दे देता था, जो नहीं दे पाता था, उसको कहा जाता था, मुसलमान बन जाओ। कांग्रेस को सत्ता में रहने की ऐसी लत लग चुकी थी कि वोट बैंक पक्का करने के लिए उसने 2014 के लोकसभा चुनाव की तारीख घोषित होने के 48 घंटे पहले दिल्ली की 123 सरकारी सम्पत्तियां वक्फ कर दीं और यह सब कानूनन किया। इस मामले में न सुप्रीम कोर्ट कुछ बोला न मीडिया में कोई बहस हुई। इस बात का पता भी तब चला जब मोदी सरकार आयी और उसने संपत्तियां वापस लीं।

पाकिस्तान से ज्यादा भूमि वक्फ बोर्ड के पास

वक्फ बोर्ड के पास अभी पाकिस्तान से अधिक जमीन है। गाँव व शहर में नदी किनारे की जमीन, चारागाह, मैदान, जंगल सब सरकार के होते हैं। लेकिन कांग्रेस ने दिल्ली में बैठकर उत्तर प्रदेश की सरकारी जमीनों की एक सूची बनाई और वक्फ बोर्ड को दे दी। उस आदेश में लिखा था कि पूरे उत्तर प्रदेश में कहीं कोई बंजर, ऊसर, परदी, नदी, नाले की जमीन है तो वह सब वक्फ की है। योगी सरकार आज उन्हीं जमीनों को चिन्हित करके, सर्वे कराकर वापस लेने का काम कर रही है।

क्या है नया वक्फ संशोधन एक्ट ?

नए संशोधन एक्ट में 44 संशोधन प्रस्तावित हैं। इसमें सर्वे कमिश्नर (मुतवल्ली) का रोल समाप्त कर दिया गया है। यह एक्ट पास हो जाता है तो वक्फ बोर्ड भले ही किसी जमीन पर दावा करे, लेकिन सर्वे नहीं कर सकेगा। सर्वे का अधिकार अब कलेक्टर के पास होगा। कलेक्टर भी रेवेन्यू बोर्ड के रिकॉर्ड और कानून के आधार पर ही सर्वे कर सकेगा। यदि किसी जमीन पर किसी मुसलमान को यह संदेह है कि यह जमीन उसकी हो सकती है तो डीएम पहले अपना रिकॉर्ड चेक करेगा। अब वक्फ के पास लोगों को परेशान करने और हफ्ता वसूली की जो सबसे बड़ी शक्ति थी वो सदा के लिए चली जाएगी।

वक्फ बोर्ड जिन सम्पत्तियों को अपनी कहता है, उनके पेपर अपलोड करने होंगे। वह जमीन वक्फ बोर्ड को कैसे मिली, इसके प्रमाण देने होंगे। नहीं दे पाए तो वो जमीन वक्फ की नहीं रह जाएगी। यह दूसरा बड़ा परिवर्तन है। तीसरा अब वक्फ ट्रिब्यूनल भी बाकी ट्रिब्यूनल जैसा होगा। यदि ट्रिब्यूनल में किसी का मुकदमा चल रहा है तो ट्रिब्यूनल को एक निश्चित समय सीमा में अपना निर्णय सुनाना होगा। संतुष्ट न होने पर पीड़ित हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट जा सकेगा। इस संशोधन की एक और विशेषता भी है। इसमें पहली बार मुसलमान शब्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि एक मुसलमान ही अपनी संपत्ति वक्फ कर सकता है (पहले कोई भी कर सकता था) और मुसलमान वह जो कम से कम 5 वर्ष से प्रैक्टिसिंग मुसलमान है। यदि कोई आज मुसलमान बन कर सम्पत्ति वक्फ करना चाहे तो नहीं कर सकता, उसे पाँच वर्ष प्रतीक्षा करनी होगी और सम्पत्ति वक्फ करने से पहले अपनी बीवी की सहमति भी लेनी होगी। बीवी को कोई आपत्ति नहीं है, यह सर्टिफिकेट भी देना होगा। बीवी को आपत्ति हुई, तो वह मुसलमान उस सम्पत्ति को वक्फ नहीं कर सकेगा। सम्पत्ति स्वयं द्वारा अर्जित है, इसका प्रमाण पत्र भी देना होगा।

अन्य देशों में वक्फ सम्पत्तियों का रख रखाव

टर्की ने 1923-24 व 25 में अलग-अलग समय में कानून बनाकर वक्फ को नेशनलाइज कर लिया। सीरिया ने 1948 में उसे नेशनलाइज कर लिया।

इजिप्ट ने 1952 में वक्फ को सरकारी हाथों में ले लिया। ट्यूनीशिया ने 1956 में वक्फ का राष्ट्रीयकरण कर दिया।

ईरान में पहले वक्फ संपत्ति प्रबंधन एक सुप्रीम काउंसिल ऑफ कल्चरल रिवॉल्यूशन करती थी, लेकिन 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद वक्फ संपत्तियों को नेशनलाइज कर लिया गया।

जबकि भारत में नेहरू ने 1954 में वक्फ बोर्ड बनाया, उसे 1995 में नरसिम्हा राव ने तो 2013 में मनमोहन सिंह ने असीमित अधिकार दे दिए। ■

-पाथेय डेस्क

वाम-लिबरल-स्यूडो सेक्युलरों को नहीं दिख रही बांग्लादेश में हिंदू प्रताड़ना

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' बांग्लादेश में हिन्दुओं के साथ हो रही बर्बरता वाले वीडियो व फोटो से अटा पड़ा है। परंतु भारत का लेफ्ट-लिबरल गैंग अपने प्रोपेगेंडा से बाज नहीं आ रहा। मोहम्मद जुबैर इस्लामी और अरफा खानम जैसे कट्टरपंथी बुद्धिजीवी इस हिंसा को झुठलाने में लगे हैं। फेक्ट चेकिंग के नाम पर तथ्यों की अनदेखी कर अरफा खानम शेरवानी, अजीत अंजुम, प्रशांत भूषण, स्वरा भास्कर जैसे लोग इस प्रोपेगेंडा को आगे बढ़ाने के लिए जुबैर की पोस्ट को रीट्वीट भी कर रहे हैं, जबकि क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय, हर मीडिया हिंदुओं पर हो रही बर्बरता को साफ दिखा रहा है।

बांग्लादेश में सत्ता विरोधी आंदोलन ने हिंदू विरोधी दंगों का रूप ले लिया है। निरपराध हिन्दुओं के घरों, दुकानों और मंदिरों पर लगातार हमले हो रहे हैं। असहाय हिंदू परिवार भागने के लिए विवश हैं।

बांग्लादेश की प्रमुख समाचार वेबसाइट द डेली स्टार के अनुसार, देश में 5 अगस्त, 2024 को 27 से अधिक स्थानों पर हिन्दुओं को निशाना बनाया गया। विश्व तथा बांग्लादेश के मीडिया सहित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' हिन्दुओं के साथ हो रही बर्बरता वाले वीडियो व फोटो से अटा पड़ा है। ऐसे समय में भी भारत का लेफ्ट-लिबरल गैंग अपने प्रोपेगेंडा से बाज नहीं आ रहा। मोहम्मद जुबैर इस्लामी और अरफा खानम जैसे कट्टरपंथी बुद्धिजीवी इस हिंसा को झुठलाने में लगे हैं। जुबैर ने अपनी पोस्ट्स में इन घटनाओं को ''झूठा प्रोपेगेंडा'' कहकर खारिज करने का प्रयास किया।

हिंदू मंदिरों की रक्षा करते मुस्लिम?

जुबैर ट्वीट करके बता रहा है कि बांग्लादेश में मुस्लिम हिंदू मंदिरों को बचाने में लगे हैं। वे बाहर बैठ कर मंदिरों पर होने वाले हमलों को रोक रहे हैं।

अब प्रश्न उठता है किससे बचा रहे हैं? क्या लूटने और हिंसा करने वाले मुसलमान नहीं कोई और हैं? ऐसी घटनाओं के समय अक्सर देखा जाता है कि मुसलमान तीन समूहों में बंट जाता है। पहला वह जो हिंसा करता है, दूसरा वह जो चुपचाप बैठा रहता है और तीसरा वह जो पहले समूह को रक्षात्मक कवच देता है। यह समूह जुमले उछालना शुरू कर देता है कि हिंसा या आतंक का कोई धर्म नहीं होता, हिंसा करने वाला बेचारा, मासूम व भटका हुआ है, मुसलमान तो हिन्दुओं की रक्षा कर रहे हैं। बांग्लादेश मामले में भी यह गैंग यही रवैया अपना रहा है।

विश्व मीडिया द्वारा हिंसा की पुष्टि

यहां तक कि बीबीसी और अल जजीरा जैसे चैनल भी हिन्दुओं पर हमलों की पुष्टि कर रहे हैं। **ह्यूमन राइट्स वॉच और एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसी संस्थाएं हमलों की निंदा कर रही हैं,** लेकिन भारत का लेफ्ट-लिबरल गैंग यह सब नहीं देख पा रहा।

मुस्लिम दोस्त ने हिंदू परिवार को पीटा

एक अन्य ट्विटर हैंडल इंद्राणी द्वारा एक लड़की का वीडियो ट्वीट किया गया, जिसमें बताया कि कल उस लड़की ने अपने मुस्लिम दोस्त के साथ फ्रेंडशिप डे मनाया था और आज बांग्लादेश में उसका ननिहाल उसी दोस्त के द्वारा नष्ट कर दिया गया है। उसके बूढ़े पिता को पीटा गया, उसके चाचा और उसका छोटा भाई गुंडों से छिप रहे हैं। उस लड़की का परिवार एक धर्मनिरपेक्ष हिंदू था।

वहीं एक ट्विटर हैंडल @visegradewy द्वारा कट्टरपंथी इस्लामियों द्वारा हिन्दुओं की दुकानें लूटने का वीडियो पोस्ट किया गया तो जुबैर इसे प्रोपेगेंडा बताने का प्रयास करता है।

बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद् ने एक्स पर एक पोस्ट में हिंदू समुदाय के मंदिरों, घरों और प्रतिष्ठानों पर 54 हमलों को सूचीबद्ध किया है।

'ढाका ट्रिब्यून' की रिपोर्ट के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने ढाका में कई प्रमुख स्थानों पर आगजनी की, जिसमें धानमंडी स्थित बंगबंधु भवन भी शामिल है, जिसे बंगबंधु स्मारक संग्रहालय के रूप में भी जाना जाता है। यह संग्रहालय हसीना के पिता शेख मुजीबुर रहमान को समर्पित है, जिनकी 1975 में राष्ट्रपति रहने के दौरान हत्या कर दी गई थी।

इस सभी मीडिया रिपोर्ट्स के बाद भी अरफा खानम कट्टरपंथी इस्लामियों को आंदोलनकारी बता रही है।

हिंदू क्रिकेटर का घर जलाया

एक ट्विटर सपना ने **बांग्लादेशी क्रिकेटर लिटन दास के घर को जलाए जाने की तस्वीरें ट्वीट की** और लिखा कि ये तथाकथित इस्लामिक प्रदर्शनकारी हिंदुओं के घर क्यों जला रहे हैं? वे हिंदू महिलाओं और लड़कियों से बलात्कार क्यों कर रहे हैं?

फेक्ट चेकिंग के नाम पर तथ्यों की अनदेखी कर अरफा खानम शेरवानी, अजीत अंजुम, प्रशांत भूषण, स्वरा भास्कर जैसे लोग इस प्रोपेगेंडा को आगे बढ़ाने के लिए जुबैर की पोस्ट को रीट्वीट भी कर रहे हैं, जबकि क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय, हर मीडिया हिन्दुओं पर हो रही बर्बरता को साफ दिखा रहा है। ■ *–पाथेय डेस्क*

मोहम्मद जुबैर इस्लामी, अजीत अंजुम, प्रशांत भूषण, अरफा खानम और स्वरा भास्कर

प्रसिद्ध लेखिका तसलीमा नसरीन के उपन्यास 'लज्जा' में दिखाया गया था हिंदू उत्पीड़न का नृशंस रूप

बांग्लादेश में पिछले दिनों सत्ता पलट के साथ ही वहां शेष बचे हिंदुओं के प्रति हिंसा की घटनाएं पहली बार नहीं हो रही हैं। प्रसिद्ध बांग्ला उपन्यासकार तसलीमा नसरीन ने 1992 में बांग्लादेश में हिंदुओं के प्रति की गई हिंसा को अपने उपन्यास 'लज्जा' के माध्यम से विश्व के सामने लाने का प्रयास किया था। इससे उन्हें न केवल कट्टरपंथियों की नाराजगी झेलनी पड़ी वरन बांग्लादेश छोड़ना पड़ा। पाठकों को इस सब से रूबरू कराता यह लेख दिया जा रहा है। इस हिंसा के विरुद्ध लाखों की संख्या में हिंदुओं द्वारा सड़क पर निकलकर विरोध रैली निकालना शुभ संकेत है - सं.

'लज्जा' तसलीमा नसरीन द्वारा रचित एक बांग्ला उपन्यास है। यह उपन्यास पहली बार 1993 में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास बांग्लादेश में सांप्रदायिक उन्माद के नृशंस रूप को रेखांकित करता है। कट्टरपंथी मुसलमानों के विरोध के कारण बांग्लादेश में लगभग छः महीने के बाद ही इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस अवधि में इसकी लगभग 50 हजार प्रतियाँ बिक चुकी थीं।

धार्मिक कट्टरपन को उसकी पूरी बर्बरता से सामने लाने के कारण उन्हें इस्लाम की छवि को नुकसान पहुँचाने वाला बताकर उनके खिलाफ मौलवियों द्वारा सजा-ए-मौत के फतवे जारी किए गए। बांग्लादेश की सरकार ने भी उन्हें देश निकाला दे दिया। जिसके बाद उन्हें भारत तथा अन्य देशों में शरणार्थी बनकर रहना पड़ा।

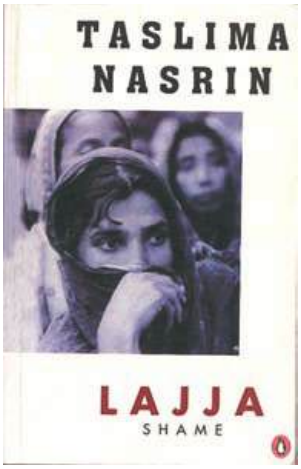

पृष्ठभूमि

'लज्जा' की शुरुआत 6 दिसम्बर, 1992 को बाबरी ढांचा तोड़े जाने पर होती है। तब बांग्लादेश के मुसलमानों ने बांग्ला हिंदुओं पर किस-किस तरह के अत्याचार किए, इसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। तसलीमा नसरीन बताती है कि बांग्लादेश बनाने की मांग हो या भाषा आंदोलन या अन्य आंदोलन, सभी धर्मों के लोगों ने साथ दिया है। लेकिन आजादी के बाद बहुसंख्यक समाज का बोल-बाला होने लगा और बांग्लादेश में हिंदू विरोधी दंगे होने लगे। बांग्लादेश को मुस्लिम (इस्लामी) राष्ट्र घोषित करने के लिए हिंदुओं को डराया जाने लगा।

हिंदुओं का घर, जमीन, मंदिर व पैसा लूटा जाने लगा। मंदिरों को लूट कर आग के हवाले कर दिया गया। इस तरह का रवैया इस्लाम की आड़ में सही ठहराया जाने लगा।

बांग्लादेश में हिंदू लोगों के घरों की बहू- बेटियों की इज्जत लूटी गई। पति के सामने पत्नी का, पिता के सामने पुत्री का, भाई के सामने बहन का बलात्कार हुआ। जबर्दस्ती उनके जानवर, जमीनों को हड़पा गया। इन परिस्थितियों में प्रशासन भी मूक दर्शक बनकर देखता रहा। बार-बार बांग्ला हिन्दुओं को इस्लाम अपनाने को कहा गया, अन्यथा देश छोड़ने की धमकी दी गई। बांग्ला हिंदुओं को सरकारी नौकरियां बहुत कम मिलती थी। अगर गलती से मिल भी गई तो जल्दी प्रमोशन नहीं होता।

उपन्यास का कथानक

इस कहानी में पूरा परिवार सिर्फ इसलिए दुःख झेलता है क्योंकि वह हिंदू है। किरणमयी एक गृहणी है। उसका पति सुधामय एक डॉक्टर है। इनके एक बेटा और एक बेटी है। सुधामय अपने देश से बहुत प्यार करते हैं। इस कारण वह घर वालों के कहने पर भी देश नहीं छोड़ना चाहते। जबकि, उनके सभी रिश्तेदार भारत जाकर बस गए हैं। सुधामय नास्तिक है। वह पूजा-पाठ में विश्वास नहीं करते। उसका बेटा सुरंजन भी इन ख्यालातों का है, जो पढ़ा लिखा हो कर भी बेरोजगार है। वह सालों से गरीब किसानों की मदद करता आया है।

उसे मेधावी छात्र होने पर भी कोई नौकरी नहीं मिली। जबकि, उससे कम अंक व कम प्रतिभाशाली मित्रों को नौकरियां आसानी से मिल जाती है। उसे नौकरी प्राप्त करने के लिए 'अस्सलाम वालेकुम' (मुसलमानों का अभिवादन) बुलवाया जाता जो कि सुरंजन को मंजूर नहीं है। वो कभी भी किसी का तोता नहीं बन सकता था। वह अपने आप को हिंदू न मानकर मनुष्य मानता है। सुरंजन अपने दोस्त हैदर की बहन परवीन से प्रेम करता था। लेकिन शादी करने के लिए परवीन ने धर्म बदलने की शर्त उसके सामने रखी, जो सुरंजन को मंजूर नहीं थी। सुरंजन की बहन माया घर का खर्च चलाने के लिए पढ़ाई करने के साथ-साथ दो जगह ट्यूशन देती है। सुधामय की उम्र हो चुकी है। उनके रिटायरमेंट के पैसे भी खत्म हो रहे थे। फिर भी सुधामय प्रेम भाव में मुफ्त ही लोगों को देख दिया करते थे। लेकिन जब वह

बीमार पड़े, तो कोई भी उन्हें देखने नहीं आया।

दंगे- पड़ोसी ने ही किया अपहरण

दंगों के समय मुस्लिम घरों ने हिंदू लड़की (माया) से अपने बच्चों को पढ़वाना सही नहीं समझा। माया के कारण सुधामय को अपना पुश्तैनी घर छोड़ना पड़ा था। क्योंकि, पड़ोसी शौकत अली ने उनके घर को अपना बताकर कोर्ट में अपील की हुई थी तथा एक बार उनके पड़ोसी ने ही माया का अपहरण कर लिया था। उस समय प्रशासन ने भी कोई सुनवाई नहीं की थी। तब माया छः वर्ष की थी। कई दिनों के बाद माया घर आई थी, उन दिनों वह अक्सर रात में डर जाया करती थी। किसी भी आदमी को देखकर रोने लगती थी। कुछ दिनों बाद घर में माया को अपहरण करने की चिठ्ठियां आने लगी। बदले में पैसों की मांग भी की गई। माया की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सुधामय ने लाखों का घर हजारों में बेच कर दूसरी जगह किराए के मकान में रहना मंजूर किया। लेकिन उनकी आर्थिक परिस्थितियां पहले से खराब हो गई। इसका एक कारण यह भी था कि सुधामय को हिंदू होने की वजह से प्रमोशन नहीं मिला। पूरी जिंदगी देश की सेवा करने के बाद भी सुधामय को देश से कुछ हासिल नहीं हुआ।

छोड़ना पड़ा अपना पहनावा

सुधामय ने देश में रहने के लिए धोती पहनना छोड़ दिया, जबकि यह उनकी सबसे पसंदीदा पोशाक थी। किरणमयी ने भी शादी के बाद सिंदूर, मंगलसूत्र, चूड़ियां तथा अन्य सुहाग की निशानियों को लगाना व पहनना छोड़ दिया। घर में मूर्ति पूजा सुधामय और सुरंजन पसन्द नहीं करते थे, जबकि किरणमय को पूजा-पाठ का बहुत शोक था।

इस परिवार को भी हिंदू होने का कर्ज समय-समय पर चुकाना पड़ा। माया को स्कूल में कुरान की क्लास लेने को मजबूर होना पड़ा। सुधामय को इस्लाम न कबूल करने पर पेशाब पिलाया गया।

बलात्कार

घर से उठाकर माया का रेप किया गया। अपने देश पर मर मिटने वाले बाप-बेटे को ये देश अनजान सा लगने लगा। इस संकट की घड़ी में सुरंजन के बचपन के दोस्तों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। अपने दोस्त आरिफ को तो सुरंजन अपनी फीस के पैसे भी उसकी अम्मी की बीमारी के इलाज में दे दिया करता था। अब सब बेचारी भरी निगाहों से उन्हें देख रहे है। अपना देश ही इन्हें बेगाना लगने लगता है। लेकिन फिर भी सुधामय अपनी आखरी सांस इस देश की मिट्टी में लेना चाहते है। सुधायम बोलते है कि हम तो नास्तिक हैं, फिर हम हिंदू कैसे हुए? फिर भी उन्हें हिंदू माना गया।

हिंदू प्रतीक

हिंदू पुरूषों को धोती को छोड़ कर पजामा पहनने के साथ-साथ दाढ़ी भी बढ़ानी पड़ी। औरतों ने सुहाग की सारी

निशानियों को पहनना व लगाना छोड़ दिया ताकि उन्हें दंगाई मुस्लिम समझें तथा वो उनके अत्याचारों से बच सके। स्कूल प्रशासन द्वारा हिंदू बच्चों को कुरान की इबादत कराई जाती थी।

पुलिस की मार पीड़ित पर

दंगो के दौरान हिंसा की शिकायत करने पर पुलिस उल्टा पीड़ित परिवार को ले जाती थी। उसे मारती तथा उस पर तरह-तरह के जुल्म ढहाती। छोड़ने के लिए 10 हजार से ज्यादा रुपया मांगती। पुलिस वाले भी औरतों का जेल में बलात्कार कर देते थे। कोई भी उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। मुसलमान हिन्दुओं की गायों को काट कर खा जाते, खेती की जमीन की झूठी रजिस्ट्री करा के हड़प लेते थे। कुछ तो हिन्दुओं की फसल चुपचाप काट लेते तथा जानवरों को चुरा लेते थे। सुरक्षा के डर से ज्यादातर हिंदू सस्ती कीमतों में अपनी जमीन बेच कर हर साल देश छोड़ देते थे।

जब-जब अजान की नमाज पढ़ी जाती थी उस समय किसी मंदिर में पूजा-पाठ नहीं हो सकता था। एक बार तो साम्प्रदायिकों के एक जुलूस ने मूर्ति पूजा का विरोध तक किया। जो संपत्ति हिंदू देश में छोड़ कर चले गये, उनकी संपत्ति शत्रु संपत्ति कहलायी जाती है। बाद में इसका नाम बदलकर अर्पित सम्पति कानून रखा। सुधामय सवाल करते है कि क्या मेरे चाचा, मामा, ताऊ देश के शत्रु थे ?

औरतों पर अत्याचार

औरतों का बलात्कार कर उन्हें रखैल की तरह रखा गया तथा धर्म बदलने को मजबूर किया गया। इन दंगो में हिन्दुओं की बहू-बेटियां बलात्कार के डर से मुसलमानों के घरों में छिप जाने को मजबूर हो गई। लेकिन कट्टर इस्लामिक धर्मगुरू उन्हें ढूंढ व बलात्कार करके फेंक देते थे। औरतों से जबर्दस्ती निकाह किया जाता। लेकिन शादी के कुछ दिनों बाद ही उस औरत को छोड़ देते थे। बहुत सी औरतें तो बलात्कार से बचने के लिए खुद को आग भी लगा लेती थीं।

(https://mediasession24.in पर 29 अगस्त, 2020 को प्रकाशित प्रिया गोस्वामी के लेख पर आधारित)

शिवकर बापूजी तलपड़े, जिन्होंने सबसे पहले बनाया था विमान

▪ **हरिशंकर गोयल** 'श्री हरि'

सन 1895 की बात है। मुंबई की चौपाटी पर रोज की तरह लोग घूमने आये हुए थे । अचानक लोगों ने देखा कि एक राजसी बग्घी चौपाटी में आई है। उस बग्घी से बड़ौदा रियासत के तत्कालीन राजा सयाजीराव गायकवाड़ उतरे । तब लोगों का ध्यान गया कि आज कुछ खास बात है इसीलिए राजा साहब पधारे हैं !

लोग कुछ समझ पाते इससे पहले महान समाज सुधारक, कांग्रेस के बड़े नेता और न्यायाधीश महादेव गोविंद रानाडे भी वहां पर आ गये।

इतने में लोगों ने देखा कि चौपाटी पर लकड़ी से बना एक पक्षीनुमा यंत्र लाया गया है । लोग उस यंत्र को घेरकर खड़े हो गये । तब एक युवक ने घोषणा की

''भाइयो और बहनों , जिस यंत्र को आप लोग देख रहे हैं वह एक विमान है जिसका नाम मैंने 'मरुत्सखा' रखा है । रामचरितमानस में प्राचीन भारत के 'पुष्पक' विमान का उल्लेख मिलता है, यह यंत्र उसी पुष्पक विमान का एक आधुनिक मॉडल है। आज हम लोग इस मरुत्सखा की उड़ान देखेंगे जिसे आप सबके सामने मेरे गुरुदेव सुब्बाराय शास्त्री जी उड़ायेंगे। अभी तक ऐसा विमान विश्व में उड़ाया नहीं गया है। आज आप लोग इस घटना के साक्षी बनेंगे''। वह 31 वर्षीय युवक और कोई नहीं शिवकर बापूजी तलपड़े ही थे।

तब सुब्बाराय शास्त्री ने कहा ''यह हम सबका सौभाग्य है कि हम एक महान विमानन वैज्ञानिक श्री शिवकर बापूजी तलपड़े को और उनके आविष्कार 'मरुत्सखा' को अपनी आंखों के सामने देख रहे हैं । आज का दिन वैमानिकी के इतिहास का अनोखा दिन होने वाला है अत: आप लोग शांति के साथ इसे उड़ता हुआ देखेंगे। चूंकि यह विमान होनहार वैज्ञानिक श्री शिवकर जी ने ही बनाया है इसलिए वे ही इसे उड़ाकर दिखायेंगे। ''

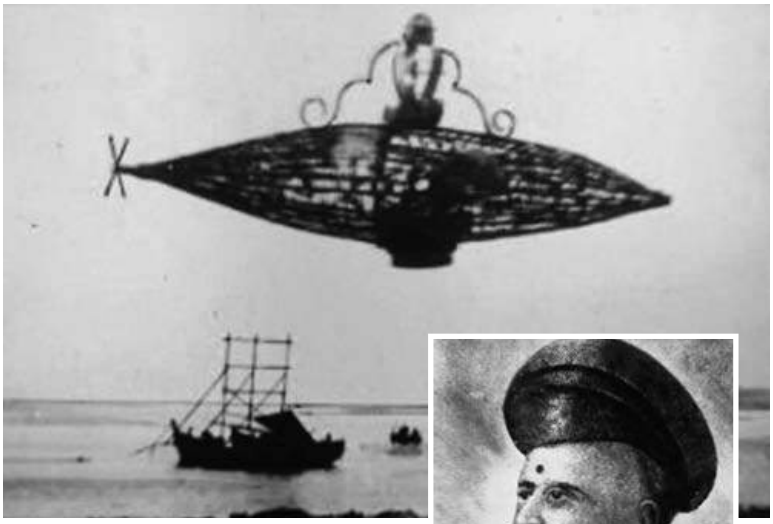

इसके पश्चात शिवकर बापूजी तलपड़े ने वह विमान उड़ाया । तालियों की गड़गड़ाहट से पूरी चौपाटी गूंज उठी। वैमानिकी इतिहास की वह सबसे अनोखी घटना थी। 'मरुत्सखा' 1500 फुट की ऊंचाई तक उड़ रहा था और वह करीब 15 मिनट तक आसमान में रहा था। इसके पश्चात वह नीचे की ओर आने लगा ।

यह घटना सन् 1895 की है। प्रसिद्ध विमान शास्त्री शिवकर बापूजी तलपड़े ने अपने गुरु सुब्बाराय शास्त्री के निर्देशन में यह विमान उड़ाकर दिखाया था। ऐसा कारनामा करने वाले वे विश्व में प्रथम व्यक्ति थे। तब तक विमानों का आविष्कार नहीं हुआ था, इसलिए विमानों को उड़ाने का श्रेय महान विमानन वैज्ञानिक शिवकर बापूजी तलपड़े को दिया जाना चाहिए । लेकिन देश का दुर्भाग्य था कि उस समय भारत पर अंग्रेजों की हुकूमत थी । क्या कभी 'गुलामों' को किसी आविष्कार का श्रेय लेने दिया जाता है? कभी नहीं।

यहां भी ऐसा ही हुआ। ब्रिटिश राज्य ने उस आविष्कार को मान्यता नहीं देने दी। सन 1903 में दो अमरीकी बंधु जिन्हें राइट ब्रदर्स कहते हैं, को केवल 120 फुट ऊंचा विमान उड़ाने के लिए जो मात्र 11 सैकंड आसमान में रहा, विमानों का आविष्कारक घोषित कर दिया गया। भारत के एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक के आविष्कार को इस प्रकार धूल धूसरित कर दिया गया।

शिवकर बापूजी तलपड़े ने प्राचीन समय के महर्षि भारद्वाज के ग्रंथ 'विमान संहिता' के आधार पर 'मरुत्सखा' नामक विमान बनाया था। उनके इस अद्भुत आविष्कार ने लोकमान्य बालगंगाधर तिलक को बहुत प्रभावित किया था । श्री तिलक ने शिवकर बापूजी के मरुत्सखा की चौपाटी पर हुई उड़ान पर अपने अखबार 'केसरी' में एक पूरा संपादकीय ही लिख डाला ।

विमान बनाने के लिए धन की आवश्यकता होती है और यह धन शिवकर बापूजी तलपड़े के पास कहां था? इसलिए वे इस तकनीक को आगे नहीं बढ़ा सके थे । 17 सितम्बर, 1917 के दिन उनका निधन हो गया। बापूजी तलपड़े पर 2015 में एक फिल्म 'हवाईजादा' भी बनी थी।

महान विमानन वैज्ञानिक श्री शिवकर बापूजी तलपड़े को शत शत नमन !

–सेवानिवृत्त सदस्य, राजस्व मंडल, अजमेर एवं आचार्य,श्रीमद्भगवद्गीता, जयपुर

एससी-एसटी वर्ग के आरक्षण में क्रीमीलेयर तथा उपवर्ग?

पिछले दिनों एक वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के आरक्षण में क्रीमीलेयर तथा 'उपवर्ग' सिद्धांत लागू करने संबंधी टिप्पणी/निर्णय दिया था। इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा लिया गया निर्णय व अन्य पहलुओं को समझने की दृष्टि से सोशल मीडिया पर प्रसारित निम्नांकित लेख दृष्टव्य है -

प्रश्न : क्या 'सुप्रीम कोर्ट ने क्रीमीलेयर' लागू करने का फैसला दिया हैं?

⊙ नहीं, क्रीमीलेयर पर चीफ जस्टिस चन्द्रचूड़ की 7 सदस्यीय बैंच के कुछ सदस्यों ने 'ओपिनियन' (सुझाव / टिप्पणी) दी थी। यह ओपिनियन 'फैसले में शामिल नहीं' थी।

प्र. क्या मोदी सरकार एससी व एसटी में क्रीमीलेयर लागू कर रही है ?

⊙ नहीं, मोदी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के सुझावों के बाद कैबिनेट मंत्रियों की बैठक कर 'क्रीमीलेयर को लागू नहीं' करने का निर्णय लिया हैं।

प्र. क्रीमीलेयर क्या है ?

⊙ क्रीमीलेयर में उन परिवारों को माना जाता है, जिनकी एक साल की आय 8 लाख हो और यह 3 साल तक लगातार हो। ऐसे को क्रीमीलेयर मानकर आरक्षण से अलग कर देते हैं। यह ओबीसी में लागू है। इससे आईएएस-आरएएस स्तर के अफसरों के बच्चों को आरक्षण मिलने के रास्ते बन्द हो जाते है।

प्र. क्या सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण कैटेगरी में उपवर्ग (सबकोटा) बनाने का फैसला दिया है?

⊙ हां, सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को अधिकार दिया है कि वे चाहें तो कैटेगरी में सब कोटा कर सकती हैं। यह राज्यों के लिए 'स्वैच्छिक' है।

प्र. कैटेगरी में सब कोटा देने में मोदी सरकार की क्या भूमिका है?

⊙ मोदी कैबिनेट ने सुप्रीम कोर्ट के क्रीमीलेयर के 'सुझाव' को रद्द कर दिया। पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा कैटेगरी के वर्गीकरण संबंधी राज्यों को दिये अधिकार के 'फैसले' पर स्टडी

करवाने के लिए विशेषज्ञों को दिया हैं।

प्र. यह सबकोटा या वर्गीकरण क्या है?

⊙ इसके तहत एक कैटेगरी में कम प्रतिनिधित्व वाली जातियों का कोटा तय किया जाता है। मान लिजिए एससी के 16 प्रतिशत आरक्षण में 4 प्रतिशत पिछड़ी एससी जातियों जैसे नायक, मोची, वाल्मीकि, धोबी, बलाई, चाण्डाल, नट आदि के लिए कर दिया जाये।

प्र. सबकोटा बनाने का आधार क्या है?

⊙ सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई व्यवस्था के अनुसार जातियों के प्रतिनिधित्व एवं

सुप्रीम कोर्ट में सबकोटा या वर्गीकरण का केस कैसे आया?

⊙ 1975 में 'पंजाब में कांग्रेस की ज्ञानी जेल सिंह सरकार' ने एससी कैटेगरी में आधी सीटों का कोटा (First preference) मजहबी सिख व वाल्मीकि जातियों को देने का फैसला किया था। 2006 में इस पर पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने रोक लगा दी। तब इसके विरोध में पंजाब में बहुत बड़ा आंदोलन हुआ। वाल्मीकि एवं मजहबी सिखों का कोटा रखने के लिए कांग्रेस की अमरिंदर सिंह सरकार The Punjab Scheduled Castes and Backward Classes (Reservation in Services) Act, 2006 कानून लेकर आई। 2010 में चमार महासभा के देविन्दर सिंह द्वारा चुनौती देने पर हाईकोर्ट ने 50 प्रतिशत कोटा देने वाली धारा 4(5) पर रोक लगा दी। 2010 में पंजाब सरकार सुप्रीम कोर्ट गई। फिर यह केस 5 जजों की बैंच से होता हुआ 7 जजों की बैंच में गया और फरवरी 2024 से इस *'देविन्दर सिंह बनाम पंजाब सरकार'* केस की सुनवाई शुरू हुई। इस केस में 1 अगस्त को राज्य को वर्गीकरण की स्वतंत्रता देने का निर्णय आया। राज्य द्वारा कोटा दी जाने वाली जातियों की स्थिति की जांच कोर्ट भी कर सकती है।

स्थिति का सर्वेक्षण किया जाता है। सटीक आंकड़े होने पर ही उन जातियों को सबकोटा में लाभ दिया जाता है।

प्र. यदि सबकोटा की सीट नहीं भरी गई तो क्या वो सीट जनरल हो जायेगी?

◎ नहीं, उसे 'एससी या एसटी (जैसी भी स्थिति हो) में कंवर्ट करके शेष एससी जातियों से भरी जायेगी।' सब कोटा एक तरह से कुछ सीटों पर वंचित जातियों को first preference की तरह होता है। उनसे पद ना भरे जाने पर शेष एससी-एसटी जातियों से भरे जाते हैं।

प्र. क्या सबकोटा का उपयोग राज्य सरकारों ने राजनीतिक फायदे के लिए करके वोट-बैंक के लिए किसी भी जातियो को जोड़ दिया तो?

◎ सुप्रीम कोर्ट के अनुसार सबकोटा में उन्हीं जातियो को जोड़ सकते है जो 'सर्वेक्षण के आंकड़ों में एससी-एसटी की वंचित जातियों' में है। कर्नाटक के ओबीसी वर्गीकरण में बिना आंकड़ों के कुछ जातियों को अलग कोटा देने पर सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार के फैसले पर रोक लगा दी थी।

प्र. राजस्थान में इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

◎ राजस्थान में एससी-एसटी की जातियों का अलग-अलग मत है। राजसमंद-चित्तौड़गढ़ का 'भील समाज' लंबे समय से एसटी में कोटे की मांग कर रहा था। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय/सुझावों का स्वागत किया हैं। वहीं वाल्मीकि समाज की भी कुछ इसी तरह की प्रतिक्रिया रही है।

प्र. एससी-एसटी की वंचित जातियों की क्या आपत्ति है?

◎ उन जातियों का कहना है कि वे लंबे समय से इसकी मांग कर रहे थे। उन्होंने कानूनी लड़ाइयां लड़ी हैं। जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व उनका हक है। उनका कहना है कि विरोध स्वरूप भारत बन्द का आह्वान करने से पहले उनसे सलाह-मशविरा भी नहीं किया गया।

वाल्मीकि, नट, बावरी, कंजर, धानका, सपेरा सहित 30 से अधिक जातियों के लोगों ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एससी-एसटी आरक्षण में उपवर्ग बनाए जाने के सुझाव / निर्णय का स्वागत किया है। उनका कहना है कि वर्तमान आरक्षण व्यवस्था से एससी-एसटी के उन जैसे वंचित वर्ग को कोई लाभ नहीं मिल रहा है। ■

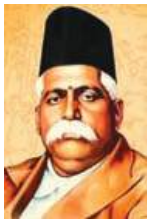

"हमारा कार्य अखिल हिंदू समाज के लिए होने के कारण उसके किसी भी अंग की उपेक्षा करने से काम नहीं चलेगा। सभी हिंदू भाईयों के साथ हमारा बर्ताव प्रेम का होना चाहिये। किसी भी हिंदू भाई को निम्न समझना पाप है।"

- डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

राष्ट्र निर्माण

राष्ट्र बनाने के लिए एक भूमि विशेष में रहने वाले लोगों के हृदय में उसके प्रति अविचल श्रद्धा का भाव होना आवश्यक है। राष्ट्र केवल मात्र नदियों, पहाड़ों, मैदानों, कंकड़ों के ढेर से नहीं बनता । यह केवल भौतिक इकाई नहीं है। इसके लिए देश में रहने वाले लोगों के हृदयों में उसके प्रति असीम श्रद्धा की अनुभूति होना प्रथम आवश्यकता है। इसी श्रद्धा की भावना के कारण हम अपने देश को 'मातृभूमि' कहते हैं।

मातृभूमि के प्रति श्रद्धा का कुछ आधार होता है। अनेक वर्षों तक एक देश में रहने के कारण एक साहचर्य एवं आत्मीयता के भाव का जन्म होता है। धीरे-धीरे राष्ट्र का एक इतिहास बनता है। कुछ बातें राष्ट्रीय गौरव की और कुछ लज्जा का कारण बनती हैं। गौरव की बातों का स्मरण कर हम गौरवान्वित होते हैं और लज्जा की बातों को याद कर लज्जित होते हैं । मोहम्मद गोरी या महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किया, इस घटना का हम विचार करते हैं, तो हमारे मन में स्वभावत: एक आक्रोश उत्पन्न होता है। हमारी आत्मीयता पृथ्वीराज तथा इस देश के अन्य देशभक्तों के प्रति होती है। यदि किसी की आत्मीयता अपने देश के प्रति न होकर परकीय आक्रमणकारियों के प्रति हो तो यह मानना होगा कि उस व्यक्ति में राष्ट्रीयता का भाव नहीं है ।

जब हम महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी या गुरु गोविन्द सिंह जी का स्मरण करते हैं तो हमारा मन उनके प्रति आदर और श्रद्धा से झुक जाता है। इसके विपरीत जब हम औरंगजेब, अलाउद्दीन, क्लाइव या डलहौजी का नाम याद करते हैं, तो इनके प्रति एक विदेशी आक्रांता के प्रति जो भाव उत्पन्न होना चाहिए वही भाव उत्पन्न होता है।

इस प्रकार एक भूमि विशेष में रहने वाले लोगों का जिनके हृदयों में मातृभूमि के प्रति असंदिग्ध श्रद्धा का भाव हो, जिनके जीवनादर्शों में साम्य हो, जीवन के प्रति एक विशिष्ट दृष्टि हो, शत्रु-मित्र समान हों, ऐतिहासिक महापुरुष एक हों, तब राष्ट्र निर्माण होता है ।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

(25 सितम्बर जयंती पर 'राष्ट्र जीवन की दिशा' पुस्तक से साभार)

माता अनुसूया

भारतवर्ष की सती-साध्वी स्त्रियों में अनुसूया जी का स्थान सर्वोच्च है। ये ब्रह्मर्षि कर्दम और देवहूति की पुत्री थी। ब्रह्माजी के मानस पुत्र महर्षि अत्रि से इनका विवाह हुआ। अत्रि परम तपस्वी थे। चित्रकूट के समीप इनका आश्रम था, जहाँ ये पति-पत्नी धर्म का पालन करते हुए तपस्या में लीन रहते थे। विष्णु के अवतार भगवान दत्तात्रेय और दुर्वासा ऋषि इन्हीं के पुत्र हुए।

माता अनुसूया ने अपने तप के प्रभाव से गंगाजी की एक धारा उस क्षेत्र में प्रकट कर दी, जो मंदाकिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई। अनुसूया ने पतिव्रता धर्म का अत्यधिक दृढ़ता से पालन किया। इस कारण उनकी कीर्ति सम्पूर्ण लोकों में फैल गई।

पुराणों की एक कथा लोक प्रसिद्ध है जिसमें ब्रह्माणी, लक्ष्मी और पार्वती के जिद करने पर उनके पतिगण ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अनुसूया जी के स्त्री धर्म की परीक्षा लेने गए। अनुसूया जी ने अपने तप के प्रभाव से इन तीनों देवताओं को शिशु रूप में परिवर्तित कर दिया और उनका लालन-पालन करने लगी। जब ब्रह्माणी, लक्ष्मी और पार्वती को उनके इस तपोबल का आभास हुआ तो वे तीनों अनुसूया जी के चरणों में गिर पड़ी और क्षमायाचना की। तीनों देवता भी अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त हुए।

श्रीराम अपने वनवास काल में अत्रि ऋषि के आश्रम पर आए, जहाँ माता अनुसूया ने सीताजी को स्त्री धर्म का उपदेश दिया।

अनुसूया जी अपने नाम को साकार करती थी। असूया का अर्थ होता है ईर्ष्या, जलन या डाह की भावना। यह भावना प्रत्येक मनुष्य को घेरे रहती है। किन्तु माता अनुसूया में यह भावना लेशमात्र भी नहीं थी। वे पूर्णरूप से असूया रहित थी।

-इन्दुशेखर 'तत्पुरुष'

राहुल गांधी की नागरिकता पर उठते प्रश्न!
भारत के नागरिक हैं या ब्रिटेन के ?

राहुल गांधी की नागरिकता पर एक बार फिर सवाल खड़ा हो गया है। राहुल गांधी भारत के नागरिक हैं या ब्रिटेन के नागरिक? उनकी निष्ठा किस देश के साथ है? पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने इस मामले में पिछले दिनों दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की है।

सुब्रह्मण्यम स्वामी ने दावा किया है कि राहुल गांधी के पास ब्रिटेन की नागरिकता है तथा ब्रिटिश पासपोर्ट है। स्वामी बताते हैं कि ब्रिटेन की एक कंपनी (बैकअप लिमिटेड) के राहुल गांधी निदेशक तथा सचिव थे। 2005 व 2006 में कंपनी की ओर से प्रस्तुत वार्षिक प्रतिवेदन में राहुल गांधी की राष्ट्रीयता ब्रिटिश बताई गई थी।

स्वामी का कहना है कि उन्होंने राहुल गांधी की नागरिकता पर केन्द्र सरकार से आरटीआई (सूचना का अधिकार) के अंतर्गत जानकारी मांगी थी। परंतु सरकार ने जांच जारी होने की बात कहकर अब तक कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। स्वामी ने अपनी याचिका में मांग की है कि गृह मंत्रालय द्वारा की गई कार्रवाई पर स्टेटस रिपोर्ट प्राप्त की जावे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार केन्द्र सरकार ने राहुल गांधी को 20 अप्रैल, 2019 को 'नागरिकता संबंधी शिकायत' विषय पर एक नोटिस भेजा था परन्तु उन्होंने अभी तक उसका कोई जवाब नहीं दिया है। प्रश्न उठता है कि सच क्या है? राहुल गांधी ब्रिटेन के नागरिक हैं या भारत के? भारतीय संविधान के अनुसार यदि कोई भारतीय नागरिक किसी अन्य देश की नागरिकता ग्रहण कर लेता है तो उसकी भारतीय नागरिकता स्वत: ही रद्द हो जाती है।

प्रश्न यह भी है कि राहुल गांधी ने 2019 में दिए गए नोटिस का अब तक जवाब क्यों नहीं दिया। वे सार्वजनिक जीवन में हैं और अब तो लोकसभा में विपक्ष के नेता के सम्माननीय संवैधानिक पद पर हैं। वे अपनी स्थिति स्पष्ट क्यों नहीं करते?

सोनिया गांधी की नागरिकता पर भी उठे हैं प्रश्न?

वैसे राहुल गांधी की माँ सोनिया गांधी की नागरिकता भी विवादों में घिरी रही है। सोनिया गांधी ने 1968 में राजीव गांधी से शादी की थी तब वे इटली देश की नागरिक थीं। भारतीय कानून के अनुसार वे भारत में 5 साल तक रहने तथा एक भारतीय नागरिक से विवाह करने के आधार पर वर्ष 1973 में भारत की नागरिक बनने की अधिकारी हो गई थीं, परंतु उन्होंने तब भारत की नागरिकता नहीं ली। भारत में रहते हुए भी इटली की नागरिक अगले 10 वर्षों तक बनी रही।

उन्होंने 1983 में भारत की नागरिकता ली। इसका अर्थ यह भी है कि उन्हें भारत का नागरिक बनना है या नहीं, यह तय करने में 14-15 वर्ष लग गए। क्या तब उनको आशंका थी कि उन्हें कभी इटली लौटना पड़ सकता है?

हालांकि यह सोनिया गांधी का निजी मामला था कि वे भारत की नागरिक रहें या इटली की, तो भी यह घोर आश्चर्य था कि कई वर्ष इटली की नागरिक रहते हुए यानी एक विदेशी महिला होने के बावजूद वे भारत की प्रधानमंत्री के घर में रहती रहीं जो कि कानून के अनुसार अनुचित था। *(राम)*

दिवेर युद्ध : अकबर पर प्रताप की निर्णायक जीत

महाराणा प्रताप का स्मरण करते समय 'हल्दीघाटी युद्ध' की चर्चा होती है। मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्रताप के त्याग, समर्पण, उनके प्रण तथा पत्नी व पुत्र के साथ बिताए कष्टमय जीवन की चर्चा भी होती है। परंतु महाराणा प्रताप द्वारा हल्दीघाटी युद्ध के 7 वर्ष पश्चात् ही 'दिवेर' नामक स्थान पर मुगल सेना पर हमला कर निर्णायक रूप से विजय प्राप्त करने की घटना का वर्णन इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों से नदारद ही दिखा।

हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् अकबर ने लगभग प्रतिवर्ष ही मेवाड़ की ओर सैन्य बल भेजे जो कि महाराणा को झुकाने में असफल रहे। दूसरी ओर प्रताप जब-तब मुगल सेना पर छापामार हमला करते रहे और मुगल सेना के आगे बढ़ जाने पर पीछे रह गए स्थानों पर फिर से कब्जा कर लेते थे। भामाशाह और उनके भाई ताराचंद ने मालवा की चढ़ाई से प्राप्त दंड के 25 लाख रुपये एवं 20 हजार अशर्फियां प्रताप को सौंप दी थीं। इस अपार धन से प्रताप ने 25 हजार लड़ाकों की सेना तैयार कर ली थी।

16 सितम्बर,1583 (विजयादशमी, वि.सं.1640) को महाराणा प्रताप ने चुनिंदा बारह सौ सैनिकों के साथ दिवेर की मुगल चौकी पर हमला कर दिया। दिवेर में एक हजार मुगल सैनिक थे। आसपास के 14 थानों के 14 हजार मुगल सैनिक भी वहां पहुँच गए। इस प्रकार 15 हजार मुगल सैनिकों के सामने प्रताप के 1200 सैनिकों ने ऐसी वीरता का प्रदर्शन किया कि मुगल सेना को उखड़ते देर नहीं लगी।

दिवेर प्रभारी सुल्तान खां पर महाराणा प्रताप के पुत्र कुंवर अमर सिंह ने अपने भाले से इतना जबरदस्त प्रहार किया कि भाला सुल्तान को घोड़े सहित बींधता हुआ भूमि में गड़ गया। प्रताप ने भीमकाय बहलोल खां को अपनी तलवार के एक ही वार से घोड़े सहित दो भागों में चीर दिया था।

यह देखकर मुगल सेना में भगदड़ मच गई। बड़ी संख्या में मुगल सैनिक मारे गए तथा शेष अजमेर की ओर भाग गए। 1585 में यद्यपि अकबर ने एक बार फिर जगन्नाथ कछवाह के नेतृत्व में एक विशाल मुगल सेना भेजी थी, परंतु यह अभियान भी असफल रहा। इसके बाद अकबर ने कभी प्रताप के विरूद्ध, जब तक प्रताप जीवित रहे (यानी 1597 तक) आक्रमण करने का साहस नहीं किया।

दिवेर पर प्रताप की विजय निर्णायक सिद्ध हुई। शीघ्र ही प्रताप ने सिर्फ मांडलगढ़ व चित्तौड़ छोड़कर सम्पूर्ण मेवाड़ पर आधिपत्य कर लिया तथा चावण्ड को अपनी राजधानी बना 1585 से 1597 तक बारह वर्ष मेवाड़ पर निष्कंटक रूप से शासन करते हुए मेवाड़ के विकास में जुटे रहे। (राम)

भारत-विमर्शम् : दिवेर दर्शन- तिरंगा यात्रा का आयोजन

78वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर युवा चिंतन समूह 'भारत विमर्शम्' के द्वारा दिवेर दर्शन-तिरंगा यात्रा का आयोजन कर विजय स्मारक पर ध्वजारोहण किया गया। स्मारक स्थित सभागार में आयोजित 'मुगलों पर महाराणा प्रताप की निर्णायक विजय-दिवेर युद्ध' विषय पर इतिहासकार एवं विजय स्मारक संस्थान के महामंत्री श्री नारायण उपाध्याय ने विचार साझा किए। इस अवसर पर इतिहास के शोधार्थी छात्रों ने भी अपने-अपने विचार रखे। यात्रा में 13 जिलों के 51 सदस्य उपस्थित थे।

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पहली बार लहराया 'तिरंगा'

छत्तीसगढ़ जिले के बस्तर संभाग में 16 गांव ऐसे हैं जिन्हें एक प्रकार से अब जाकर (यानि 77 वर्ष बाद) स्वाधीनता मिली है। ये गांव हैं नेरली घाटी (दंतेवाड़ा), पानीडोबरी (कांकेर), गुंडम, पूतकेल, मेंडीगुड़ा और छुटवाही (बीजापुर), कस्तूरमेटा, मसपुर, इरकभट्टी और मोंहदी (नारायणपुर), मुलेर, परिया, सलातोंग, टेकलगुड़म, लाखापाल और पुलनपाड़ (सुकमा), जहां ग्रामीणों ने नक्सल भय से मुक्त होकर सीआरपीएफ व स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर ध्वजारोहण किया और तिरंगा रैली निकाल कर लोकतंत्र की मौजूदगी का आभास कराया। उल्लेखनीय है कि इन गांवों में अभी तक स्वतंत्रता दिवस को नक्सलियों द्वारा 'काला दिवस' के रूप में मनाया जाता रहा है।

सशक्त केन्द्रीय नेतृत्व और नक्सल विरोधी अभियानों के चलते यह सब संभव हो पाया है।

हिमंत बिस्व सरमा ने चेताया –

असम का भविष्य है खतरे में
आखिरी सांस तक करूंगा इसकी रक्षा

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा अपनी बात बिना किसी लाग लपेट के कहने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने गत 15 अगस्त को तिरंगा फहराने के बाद कहा कि असम में हिंदू-मुसलमानों के बीच जनसंख्या संतुलन तेजी से समाप्त हो रहा है। असम में (धार्मिक) जनसांख्यिकी परिवर्तन के कारण मूल निवासी 'रक्षात्मक मुद्रा' में आ गए हैं। इसके कारण राज्य का भविष्य सुरक्षित नहीं है।

12 प्रतिशत से 41 प्रतिशत

उन्होंने कहा कि मुस्लिम आबादी जो 1947 में 12 प्रतिशत थी वह बढ़कर 2021 में 41 प्रतिशत हो गई है, जबकि हिंदू घटकर 57 प्रतिशत रह गए हैं, शेष ईसाई व अन्य समुदाय हैं।

वापस लाना होगा जनसंख्या संतुलन

श्री सरमा ने कहा, '' संकट के ऐसे दौर में मैं जनसंख्या संतुलन वापस लाने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं सभी से परिवार नियोजन संबंधी नियमों का पालन करने का अनुरोध करता हूँ। हमें समाज के हर वर्ग द्वारा बहुविवाह को लेकर जागरूक करना चाहिए। '' उन्होंने असम के 12-13 जिलों में हिंदुओं के अल्पसंख्यक बन जाने के तथ्य का उल्लेख करते हुए कहा, ''अगर मजबूत राज्य सरकार नहीं होगी तो मूल निवासियों को हर कदम पर खतरा महसूस होगा। मूल निवासियों के हितों की रक्षा के लिए अपनी आखिरी सांस तक उम्मीद की मोमबत्ती की तरह खड़ा रहूंगा।''

हिंदू लड़की को प्रताड़ित करने वाले भी दे रहे हैं
देश को बांग्लादेश बनाने की धमकी

बांग्लादेश में तथाकथित छात्र आंदोलन के दौरान सेना द्वार सत्ता पलट की घटना से भारत में कई लोगों का उत्साहित होना आश्चर्यजनक है। उन्हें शायद सपने आने लग गए हैं कि भारत में सत्ता पलट के बाद वे ही सत्तारूढ़ होने वाले हैं। सलमान खुर्शीद से लेकर कई छूटभइये उछल रहे हैं। इतना ही नहीं तो लड़कियों से छेड़छाड़ करने वाले एक समुदाय विशेष के अराजक तत्व तक का उत्साह बढ़ गया है और भारत को बांग्लादेश बनाने की धमकी देने लगे हैं।

बरेली जिले के गांव आंवला में बीते 17 अगस्त को अनुसूचित जाति की एक 16 वर्षीय नाबालिग लड़की जब परीक्षा संबंधी जानकारी लेने पास के एक जनसेवा केन्द्र पर गई तो रास्ते में सलीम, फैजान, आमिर, अरमान व अकबर ने उसके साथ अश्लील हरकतें की और उसके सीने पर हाथ मारा। पीड़िता द्वारा विरोध करने पर आमिर ने तमंचा निकाल कर मारने की धमकी दी तथा कहा '' तेरा

धर्म परिवर्तन करवा के मुस्लिम बना दूंगा। तूने कुछ किया तो आंवला को बांग्लादेश बना दूंगा।''

क्या है कोई विश्वव्यापी योजना?

यद्यपि पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर आरोपियों की धरपकड़ शुरू कर दी है, परंतु यहां विचार करने की बात यह है कि बांग्लादेश में तख्ता पलट से भारत में अराजक तथा जिहादी तत्वों का उत्साहित होना किस ओर इशारा करता है? क्या कोई विश्वव्यापी योजना है जिसके अंतर्गत बांग्लादेश में छः माह पूर्व 3/4 बहुमत से चुनी गई सरकार का तख्ता पलट कर कट्टरपंथी तथा अमेरिका परस्त लोग सत्ता पर हावी हो गए हैं। क्या भारत के लिए भी उनकी कोई योजना है?

श्रद्धांजलि

संघ के पूर्व अ.भा.सह व्यवस्था प्रमुख का निधन

संघ के वरिष्ठ प्रचारक, पूर्व अखिल भारतीय सह व्यवस्था प्रमुख रहे श्री बालकृष्ण त्रिपाठी 'बालजी' का गत 20 अगस्त को लखनऊ के राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल में निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे।

कानपुर के तत्कालीन विभाग प्रचारक स्व.अशोक सिंहल की प्रेरणा से नौकरी छोड़कर आपने 1962 में संघ प्रचारक के रूप में मां भारती को सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया।

आपातकाल के समय आपने कानपुर में भूमिगत होकर सक्रिय रूप से कार्य किया। वर्तमान में आपका केन्द्र लखनऊ था।

पाथेय कण परिवार आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है? : 1. मैसूर (कर्नाटक) 2. इटली 3. द्रास (लद्दाख) 4. विटामिन-D 5. कांतारा 6. मराठों और अहमदशाह अब्दाली 7. राजा कनिष्क 8. कुमार गुप्त (प्रथम) 9. शुक्र 10. ईटानगर

जयपुर

अ.भा.साहित्य परिषद ने मनाई तुलसी जयंती

जयपुर के जवाहर कला केन्द्र पर महाकवि तुलसीदास जी की जयंती का आयोजन किया गया। (11 अगस्त)

मटलाना (दौसा)

ग्रामवासियों ने किया पौधारोपण

मटलाना गांव में 'अमृता पर्यावरण संरक्षण अभियान' में लगाए गए प्रत्येक पौधे को संरक्षण के लिए एक-एक महिला ने गोद लिया। मुख्य वक्ता थे संघ के जयपुर प्रांत प्रचारक श्री बाबूलाल। (10 अगस्त)

कोटा

समन्वय रक्षाबंधन उत्सव

कोटा में संघ का समन्वय रक्षाबंधन उत्सव। मुख्य वक्ता थे चित्तौड़ प्रांत प्रचारक श्री मुरलीधर एवं मुख्य अतिथि वर्धमान खुला विश्वविद्यालय, कोटा के कुलपति प्रो. कैलाश सोडाणी। (21 अगस्त)

पाली

सामाजिक परिवर्तन पर संगोष्ठी

संघ की ओर से आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता थे संघ के अ.भा. कार्यकारिणी के सदस्य श्री वी. भागैया। जिला कलेक्टर श्री एलएन मंत्री थे मुख्य अतिथि। संयुक्त परिवार, पर्यावरण व गायों की रक्षा को लेकर हुई चर्चा। (25 अगस्त)

जयपुर

श्री जयदेव पाठक जन्मशताब्दी संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षक संघ (रा.) का आयोजन। मुख्य वक्ता थे संघ की क्षेत्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री कैलाश चन्द। मुख्य अतिथि थे श्री बजरंग प्रसाद मजेजी। (25 अगस्त)

जैसलमेर

जवानों को रक्षा-सूत्र बांधने पहुँची बहिनें

सीमाजन कल्याण समिति के कार्यकर्ता और बहिनें भारत-पाक सीमा की 120 चौकियों तक पहुँची और जवानों को रक्षा-सूत्र बांधकर उनकी लंबी उम्र की कामना की। (19 अगस्त)

अजमेर

'इदं राष्ट्राय' पुस्तक का विमोचन

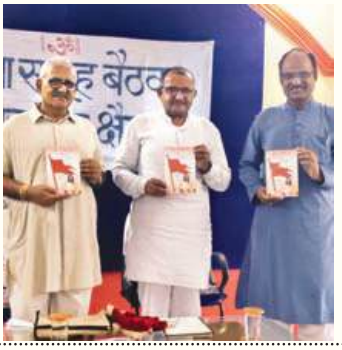

वरिष्ठ साहित्यकार उमेश कुमार चौरसिया की नई कृति ''इदं राष्ट्राय'' का विमोचन श्री गुरुजी गोलवलकर के प्रेरणादायी जीवन प्रसंगों पर केन्द्रित पूर्णांकी नाटक की यह पुस्तक संघ की राष्ट्रसेवा संकल्पना को स्पष्ट करती है। (11 अगस्त)

जयपुर

पूर्व लोक मंथन का आयोजन

प्रांत की लोक कलाओं एवं लोक कलाकारों को राष्ट्रीय पटल पर पहचान दिलाने हेतु पूर्व लोक मंथन का आयोजन प्रज्ञा प्रवाह, जयपुर प्रांत एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग द्वारा। मुख्य वक्ता थे प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे. नंद कुमार। अध्यक्षता कुलपति द्वारा। (20 से 22 अगस्त)

निवाई

उपहार में पौधे ही स्वीकार किए

संघ के कार्यकर्ता तथा शिक्षा विभाग के श्री रामप्रकाश विजय ने अपने सेवानिवृत्ति समारोह में पौधों को ही उपहार में स्वीकार किया। उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर लगाया गया है। (1 अगस्त)

भगवान विश्वकर्मा

भगवान विश्वकर्मा को निर्माण एवं सृजन का देवता माना जाता है। उन्हें दुनिया का पहला इंजीनियर और वास्तुकार कहा जाता है। उन्होंने कई पौराणिक इमारतों और शानदार शहरों की रचना की थी। कहा जाता है कि विश्वकर्मा ने विष्णु के सुदर्शन चक्र, शिव के त्रिशूल, इंद्र के वज्र और रुद्र के रथ का निर्माण किया। मूर्तियों के अधिष्ठाता देवता विश्वकर्मा की माता का नाम महासती योगसिद्धा था। विश्व रूप और व्रज विश्वकर्मा के पुत्र थे। भगवान विश्वकर्मा ने ही इंद्रपुरी, द्वारिका, हस्तिनापुर, स्वर्गलोक, लंका, यमपुरी, और जगन्नाथपुरी का निर्माण करवाया था। कहते हैं, चार युगों में विश्वकर्मा ने कई नगर और भवनों का निर्माण किया। भारत में विश्वकर्मा को शिल्पशास्त्र का आविष्कारक देवता माना जाता है।

कारखानों व उद्योगों में भगवान विश्वकर्मा की महत्ता प्रकट करते हुए कामगारों द्वारा प्रत्येक वर्ष 17 सितम्बर को उनकी जयंती मनाई जाती है। भारत के अलावा नेपाल में उनकी जयंती एक उत्सव/पर्व के रूप में मनाई जाती है।

दिवस

विश्व पर्यटन दिवस : वैश्विक पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1980 में इस दिवस को मनाने की शुरुआत हुई। यूएन डब्ल्यूटीओ की वर्षगांठ के दिन इसे 27 सितम्बर को मनाने का निर्णय लिया गया था।

मां-बच्चों के बीच संवाद मोबाइल से हुआ कम

टेक्सास यूनिवर्सिटी द्वारा बच्चों के देरी से बोलने के कारणों पर किए गए शोध के अनुसार मां अगर फोन में व्यस्त रहती है तो बच्चे से कम शब्द बोल पाती है। जैसे-जैसे यह अवधि बढ़ती है, मां से बच्चों की बातचीत कम होती जाती है। जयपुर के अस्पतालों में रोजाना डेढ़ से तीन वर्ष की आयु के बच्चों को लेकर करीब 10 लोग इस परेशानी के साथ पहुँच रहे हैं। विश्लेषण के नतीजे बताते हैं कि भाषा विकास के साथ बच्चों में वर्चुअल ऑटिज्म की समस्या बढ़ रही है जिससे बच्चा संवाद नहीं कर पाता। प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ (जयपुर) डॉ. अशोक गुप्ता का कहना है कि अभिभावक वर्चुअल दुनिया से हटकर बच्चों को समय देने की आदत डालें।

घरेलू नुस्खा

- कब्ज : जीरे और अजवायन को बराबर मात्रा में धीमी आंच पर भून कर पीस लें। अब इसमें समान मात्रा में पिसा काला नमक मिलाकर एक डिब्बे में रख लें। रोज आधा चम्मच गुनगुने पानी के साथ लेने से कब्ज में आराम मिलता है।

कुकिंग / किचन टिप्स

- दही अगर टाइट नहीं जमता है तो उसमें एक कटी हरी मिर्च जमाते समय डाल देने से दही एकदम टाइट जमेगा।

आओ संस्कृत सीखें-43

- आप कब आए? **भवान् कदा आगतवान्?**

गीता- दर्शन

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्॥

श्रीकृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन! सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण- ये प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं। (14/05)

लुप्त संख्या ज्ञात करो

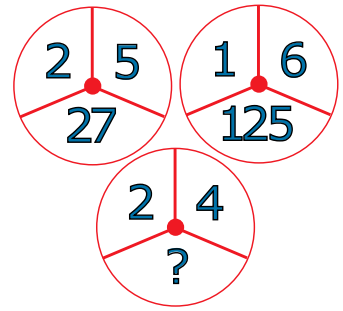

उत्तर 4 - 2 = 2 X 2 X 2 = 08

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. राष्ट्रीय योग ओलंपियाड-2024 का आयोजन कहां किया गया था?
2. जी-7 समूह का 50वां वार्षिक शिखर सम्मेलन किस देश में आयोजित हुआ था?
3. कारगिल युद्ध स्मारक कहाँ स्थित है?
4. सूर्य की प्रकाश किरणों से हमें कौन सा विटामिन मिलता है?
5. 70वें नेशनल फिल्म अवार्ड के दौरान ऋषभ शेट्टी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार किस फिल्म के लिए दिया गया है?
6. पानीपत का तीसरा युद्ध किनके बीच हुआ था?
7. महान चिकित्सक महर्षि चरक किसके दरबार की शोभा थे?
8. नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना किसके शासन काल में की गई थी?
9. किस ग्रह को 'भोर का तारा' कहा जाता है?
10. अरुणाचल प्रदेश का सबसे बड़ा नगर कौन सा है?

उत्तर इसी अंक में...

कथा

तीन खिलौने

एक आदमी खिलौने बेचने ऐसे राज्य में जा पहुँचा जहाँ राजा को नए व अनोखे खिलौने पसंद थे।

उसने बक्से से तीन खिलौने निकाले जो मानव आकृतियों में थे। राजा से उसने कहा, ''पहले खिलोने का मूल्य एक हजार सोने के सिक्के है, दूसरे का एक सौ सोने के सिक्के और तीसरे का मूल्य केवल एक सोने का सिक्का है।'' राजा सोचने लगा कि कीमत में इतना अंतर क्यों है! समझ में नहीं आया तो राजा ने मंत्री से पूछा। उसने तीन तिनके लाने का आदेश दिया और पहले खिलौने के कान में तिनका डाला। जो सीधा पेट में चला गया। थोड़ी देर बाद खिलौने के होंठ हिले और फिर बंद हो गए।

अब दूसरे तिनके को खिलौने के कान में डाला जो दूसरे कान से निकल रहा था।

उसके बाद तीसरे खिलौने के कान में तिनका डाला और उसका मुँह एक ही बार में खुल गया और लगातार हिलता रहा।

यह देखकर राजा ने पूछा, 'यह सब क्या है?'

मंत्री ने उत्तर दिया, ''समझदार आदमी सुनी हुई बात हमेशा अपने भीतर रखता है। उसकी पुष्टि करने के बाद ही वह अपना मुँह खोलता है। इसलिए इसका मूल्य एक हजार सोने के सिक्के है।

कुछ लोग हमेशा अपने आप में ही मग्न रहते हैं और बाकी सब बातों को नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें दूसरों का ध्यान या प्रशंसा पाने की कोई इच्छा नहीं होती है। ऐसे लोग कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। इसलिए इसका मूल्य एक सौ सोने के सिक्के हैं।

कुछ लोगों के कान कमजोर (कच्चे) होते हैं। कुछ भी सुनने के बाद, बिना यह जानने की कोशिश किए कि वह बात सच है या नहीं, लोगों को बताने लग जाते हैं। इसलिए इसकी कीमत सिर्फ एक सोने का सिक्का है।''

वर्ग पहेली

12 महीनों के नाम खोजिए

अ	ग	स्त	मा	अ	श्री
जु	प्रै	र्च	न	क्टू	ज
ला	म	ल	व	ब	फ
ई	दि	स	म्ब	र	र
सि	त	म्ब	र	जू	व
ल	प	ज	न	व	री

उत्तर : जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर

बाल प्रश्नोत्तरी - 62

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 16 जुलाई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - **20 सितम्बर, 2024**

1. प्रसिद्ध तालकटोरा स्टेडियम कहाँ स्थित है?
(क) दिल्ली (ख) आगरा (ग) जयपुर (घ) चंडीगढ़

2. चिन्मय मिशन की स्थापना किस वर्ष में हुई थी?
(क) 1952 (ख) 1953 (ग) 1951 (घ) 1955

3. ''मनीषा पंचकम्'' किसके द्वारा रचित है?
(क) माधवाचार्य (ख) आदि शंकराचार्य (ग) वल्लभाचार्य (घ) भास्कराचार्य

4. विश्व हिंदू परिषद की स्थापना किस आश्रम में हुई थी?
(क) चिन्मय आश्रम (ख) रामकृष्ण आश्रम (ग) पवई आश्रम (घ) शांतिकुंज

5. हिंदू अध्ययन केन्द्र की शुरुआत किस विश्वविद्यालय में हुई है?
(क) दिल्ली विश्वविद्यालय (ख) एमडीयू (ग) राजस्थान विश्वविद्यालय (घ) जेएनयू

6. 'माधव सेवा विश्राम सदन' देहरादून जिले के किस स्थान पर बना है?
(क) ऋषिकेश (ख) हरिद्वार (ग) वाराणसी (घ) अयोध्या

7. जोरावर टैंक का सफल परीक्षण गुजरात में किस स्थान पर किया गया?
(क) हल्दिया (ख) हजीरा (ग) दमका (घ) मोरा

8. गत 26 जून को भारतीय नौसेना को कौन सा रॉकेट सौंपा गया?
(क) आरएच-75 (ख) आरएच 100 (ग) चैफ रॉकेट (घ) आरबीयू 6000

9. चन्द्रयान मिशन में विद्या भारती के कितने छात्र शामिल थे?
(क) चार (ख) सात (ग) पाँच (घ) नौ

10. प्रधानमंत्री मोदी को किस देश का सर्वोच्च नागरिकता सम्मान दिया गया है?
(क) रूस (ख) जापान (ग) इंग्लैण्ड (घ) ब्रिटेन

समीकरण हल कीजिए

उत्तर : 5 + 6 +10 = 21

बाल प्रश्नोत्तरी-60 के परिणाम

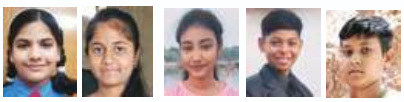

लावण्या कृतिका रीतू विवेक आदित्य

1. लावण्या गर्ग, करतारपुरा फाटक, जयपुर
2. कृतिका डांगी, अरनोद, प्रतापगढ़
3. रीतू सैनी, पिलानी, झुंझनू
4. विवेक मृगड़, आसीन्द, भीलवाड़ा
5. आदित्य सिंह, मकराना, डीडवाना
6. कृपा सैनी, पाटन, नीमका थाना
7. गजल भाटिया, तालरियापाडा, जैसलमेर
8. विहान जैन, दुर्गापुरा, जयपुर
9. तन्मय सिंह, मेड़ता, नागौर
10. कुंज भाटिया, तालरियापाडा, जैसलमेर

सही उत्तर
1. (क)
2. (ख)
3. (ग)
4. (घ)
5. (क)
6. (ख)
7. (ग)
8. (घ)
9. (ग)
10. (क)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 62)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.....कक्षा.....पिता का नाम.....

उम्र..... पूर्ण पता.....

.....पिन.....मोबाइल.....

हिंदू समाज को जान-बूझकर बनाया जा रहा है निशाना
विरोध में एकजुट हिंदू समाज उतरा सड़कों पर

पिछले दिनों जिस प्रकार के घटना क्रम घटे हैं उससे राजस्थान ही नहीं पूरे देश को एक सबक लेने की जरूरत है।

शास्त्री नगर (जयपुर) में गत 16 अगस्त को ई-रिक्शा और एक स्कूटी चालक के बीच गाड़ी आगे-पीछे करने को लेकर हुई कहासुनी के दौरान ई-रिक्शा सवार शाहरुख व उसके दो अन्य साथियों ने दिनेश स्वामी और उसके साथी जितेन्द्र के साथ मारपीट की। इलाज के दौरान दिनेश की मौत हो गई। घटना के बाद हिंदू समाज के लोग सड़कों पर उतर आए और थाने में ही धरने पर बैठ गए। हिंदू समाज के दबाव के बाद मामला दर्ज हुआ और पुलिस ने आरोपी शाहरुख को गिरफ्तार किया है।

उदयपुर में दसवीं कक्षा के छात्र देवराज की उसके सहपाठी ने चाकू मार कर हत्या कर दी। पुलिस पूछताछ में स्पष्ट हुआ है कि आरोपी छात्र का पिता अपने बेटे को गुंडा बनाना चाहता था तथा अपराध के लिए प्रेरित भी करता था। पुलिस ने आरोपी छात्र एवं पिता दोनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इस हत्याकांड से सर्व हिंदू समाज उद्वेलित है। उदयपुर, सीमलवाड़ा सहित कई स्थानों पर रैली निकालकर आरोपी को फांसी की सजा देने के साथ-साथ उनके परिवार को मिल रहे सरकारी योजनाओं का लाभ बंद करने की मांग की है।

नोहर में गोगाजी मंदिर में होने वाले रात्रि जागरण के लिए लगे टेंट व लाइट डेकोरेशन को हटाने के मामले में हुई कहासुनी के बाद आरोपी निसार खां सुबह 7-8 बजे बोलेरो में 6-7 साथियों के साथ आया और गोलियां चलाने लगा। घटनास्थल पर ही मानसिंह की मृत्यु हो गई तथा तीन लोग घायल हो गए। इस पर गुस्साए ग्रामीणों ने हाईवे जाम कर आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

कैथून (कोटा) में 15 अगस्त की रात कुछ मुस्लिम उपद्रवियों को मंदिर के पास अपशिष्ट पदार्थ फेंकने से टोका तो पास की दरगाह से बुलावे पर हथियार लेकर आए 20-25 कट्टरपंथियों ने मंदिर को बम से उड़ाने की धमकी देते हुए पुजारी सोहन लाल को जान से मारने का प्रयास किया।

भीलवाड़ा शहर में कृष्ण जन्माष्टमी के एक दिन पूर्व हनुमान मंदिर में अराजक तत्वों द्वारा गोवंश के अंश फेंके जाने पर बड़ी संख्या में लोग धरने में बैठ गए तथा दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की। माहौल तनावपूर्ण बना हुआ है।

अब भी हिंदू समाज वर्ग-भेद, जाति-बंधन आदि भेदभावों से बाहर निकल कर एकजुट और मुखर नहीं हुआ तो इस तरह की घटनाओं को रोकना शायद मुश्किल हो जायेगा।

कोलकाता में महिला डॉक्टर का बलात्कार एवं निर्मम हत्या

प.बंगाल की राजधानी कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक महिला डॉक्टर के बलात्कार एवं निर्मम हत्या की घटना से पूरा देश दहल गया है। भले ही मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 'हत्यारे को फांसी दी जानी चाहिए' यह कहा है, परंतु आम धारणा है कि वहां की सरकार प्रशासन और पुलिस दोषी व्यक्तियों को बचाने में लगी हैं।

2012 में दिल्ली में हुए निर्भया बलात्कार-हत्या कांड के पश्चात् कड़े कानून बनाए गए थे। निर्भया के अपराधियों को फांसी दी गई थी। फिर भी, ऐसी घटनाएं रुक नहीं रही हैं। इस संबंध में समाजशास्त्रियों, कानूनविदों, सरकार के प्रतिनिधियों आदि को पुन: गंभीरता से विचार करना चाहिए।

घरों तथा विद्यालयों में संस्कार की कमी को भी दूर करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(16 से 30 सितम्बर, 2024)
(भाद्रपद शु.13 से आश्विन कृ.13 तक)

जन्म दिवस

17 सितम्बर (1892)- हनुमान प्रसाद पोद्दार
17 सितम्बर - भगवान विश्वकर्मा
20 सित.(1911) - पं.श्रीराम शर्मा आचार्य
24 सितम्बर (1861)- मैडम कामा
25 सित. (1933) - स्वामी सत्यानंद सरस्वती
25 सितम्बर (1916)- पं. दीनदयाल उपाध्याय
26 सितम्बर (1820)- ईश्वरचंद विद्यासागर
27 सितम्बर (1926)- श्री अशोक सिंहल
28 सितम्बर (1907)- क्रांतिकारी भगत सिंह
28 सितम्बर (1893)- पं.श्रीनारायण चतुर्वेदी

बलिदान दिवस / पुण्यतिथि

17 सित.(1917)- वैज्ञानिक शिवकर बापूजी तलपड़े की पुण्यतिथि
17 सित. (1860)-लाला जयदयाल, मेहराब खान को कोटा में फांसी
19 सित. (1726)- खण्डो बल्लाल की पुण्यतिथि
29 सित.(1942)- मातंगिनी हाजरा का बलिदान
30 सित.(1915)- सूफी अम्बाप्रसाद का बलिदान
30 सित.(1962)- लाला हरदेव सहाय की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण घटनाएं / अवसर

17 सित.(1948)-हैदराबाद का भारत में विलय
27 सितम्बर - विश्व पर्यटन दिवस

सांस्कृतिक पर्व / त्योहार

6 सित.- हरितालिका तीज, **7 सित.**- महागणपति जन्मोत्सव, **8 सित.**-ऋषि पंचमी, **11 सित.**- मेला भर्तृहरि (अलवर), **18 सित.**-पितृपक्ष प्रारंभ

पंचांग- भाद्रपद (शुक्ल पक्ष) 4-18 सितम्बर, 2024 तक

हरितालिका तीज व्रत- 6 सितम्बर, **रोट तीज** (जैन)-6 सित., **महागणपति चतुर्थी** -7 सित., **ऋषि पंचमी**-8 सित., **सूर्य षष्ठी**-9 सित., **राधाष्टमी**-11 सित., **मेला भर्तृहरि प्रारम्भ** (अलवर)- 11 सित., **श्रीचंद्र नवमी** (उदासीन संप्रदाय) - 12 सित., **सुगंध धूप दशमी**-13 सित., **पदमा एकादशी व्रत** (जलझूलनी)-14 सित., **प्रदोष व्रत**-15 सित., **पंचक प्रारम्भ**- 15 सित. (प्रात: 5:45 बजे), **अनन्त चतुर्दशी**-17 सित., **सत्यनारायण व्रत**-18 सित., **पितृपक्ष प्रारम्भ** (श्राद्ध कर्म)- 18 सित., **क्षमावणी पर्व** (जैन)- 18 सित.

ग्रह स्थिति : चन्द्रमा : 4 सितम्बर को **सिंह** राशि में, 5-6 सितम्बर को **कन्या** राशि में, 7 से 9 सितम्बर **तुला** राशि में, 10-11 सितम्बर को नीच की राशि **वृश्चिक** में, 12-13 सितम्बर को **धनु** राशि में, 14 से16 सितम्बर **मकर** राशि में, 17-18 सितम्बर को **कुंभ** राशि में गोचर करेंगे।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष में **गुरु** व वक्री **शनि** यथावत क्रमश: वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमश: पूर्ववत मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** व **शुक्र** क्रमश: मिथुन व कन्या राशि में बने रहेंगे। **सूर्य** 16 सितम्बर को प्रात: 7:43 बजे सिंह से कन्या राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 4 सितम्बर को दोपहर 11:22 बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे।

स्वराज्य संस्थापक

छत्रपति शिवाजी

17

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

शिरवाल में पराजित फतेह खां ने पुरंदर किले पर हमला किया... भयंकर संघर्ष हुआ किन्तु शिवाजी की सेना ने पत्थर व तीरों से सैकड़ों सैनिकों को मृत्यु के घाट पहुँचा दिया। स्वयं फतेह खां जान बचाकर भागा। इस युद्ध में बाजी पासलकर भी मृत्यु को प्राप्त हुए ।

शिरवाल व पुरंदर की विजय शिवाजी की बड़ी उपलब्धि थी। मराठा वीरों ने बीजापुर आदिलशाही सेना को हराकर 'स्वराज्य' को स्थायित्व दिया।

'स्वराज्य' की राजधानी में विजय उल्लास कुछ समय बाद ही दु:ख में बदल गया... शिवाजी के पिता शाहजी राजे को दुश्मन ने धोखे से गिरफ्तार कर लिया

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
(1-15 सितम्बर , 2024)
(26 अगस्त को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

RAS- 2021 में 750+ Selections

Springboard ACADEMY

AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Star achievers who realised their dreams of civil services with us

5 Ranks in TOP 10, 34 Ranks in TOP 50 & 69 Ranks in TOP 100 Students

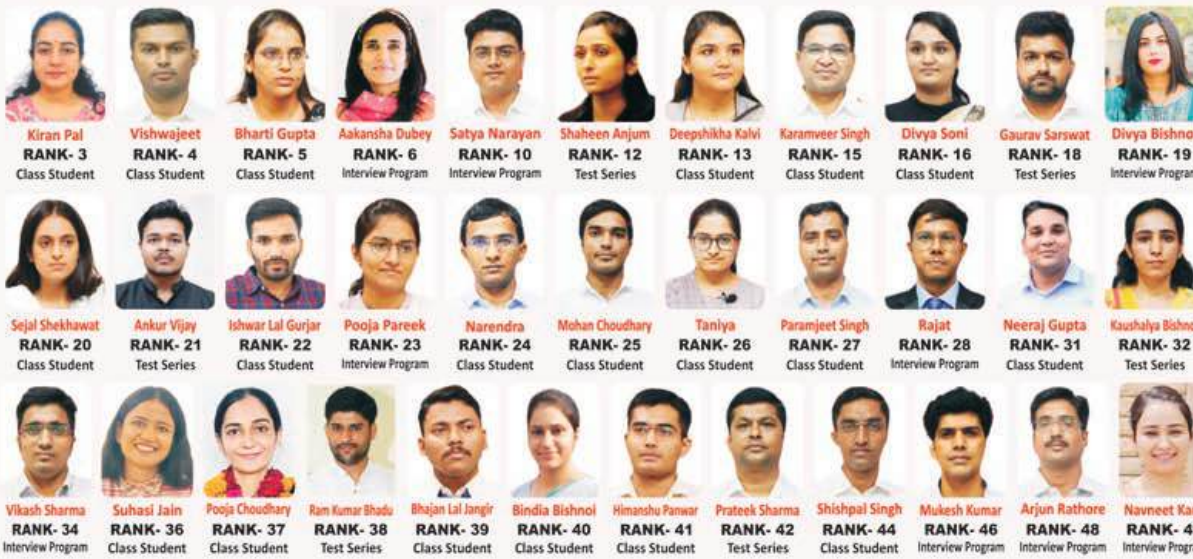

RAS

Foundation Batch

Online & Offline

27 अगस्त से बैच प्रारम्भ

Exclusive Live Batch from Classroom

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur

9636977490, 0141-3555948

ऐप डाउनलोड करने के लिए QR Code स्कैन करें

GET IT ON Google Play

Connect with us- Springboard Academy Online Springboard Academy Jaipur

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7610010054, 7300134518

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 सितम्बर, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,

_____

_____

_____